bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –32 अक्टूबर द्वितीय अंक – 06

वर्तमान

कमल ज्योति

नया भारत, नयी उड़ान

₹20

डबल इंजन की सरकार

नारी शक्ति वंदन
महिला सम्मेलन
मा0 भूपेन्द्र सिंह चौधरी जी

पीएम-विश्वकर्मा
प्रदेश कार्यशाला
मा0 बी. एल. वर्मा

भारतीय जनता पार्टी
उत्तर प्रदेश

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

नेह निमंत्रण

श्री राम जन्मभूमि मंदिर नूतन विग्रह प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को होगी।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

सम्पादकीय

पराली प्रदूषण की चिन्ता?

उत्तर भारत में सर्दी आते ही धूल, धुआ, धुन्ध के कारण प्रदूषण की समस्या खड़ी हो जाती है। आधुनिक मशीनी खेती के कारण खेतों में फसलों के आवशेष जलाने की घटनाये बढ़ती हैं। सरकारे किसानों पर जुर्माना भी लगाती है, झगड़े फसाद भी होते हैं।

सितंबर से नवंबर के अंतिम सप्ताह तक गेहूं की बुवाई के लिए खेत से धान की फसल के अवशेषों को हटाने की एक तरीका स्टबल बर्निंग कहलाता है।

केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव दिल्ली पश्चिम उ0प्र0 और आसपास के इलाके में बढ़ रहे प्रदूषण को लेकर काफी चिंतित है। पर्यावरण मंत्री ने कहा कि अगले 40 दिन दिल्ली के लिए काफी अहम है। दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में तेजी से Stubble Burning बढ़ रहा है। इस साल 24 लाख टन पराली को खत्म करने के लिए mechanism तैयार किए गए हैं। दरअसल, इसी मौसम में किसान अपने खेतों में पराली जलाते हैं।

आजकल फसल काटने के लिए एक खास तरह की मशीन का उपयोग होता है। जिससे फसल तो कट जाता है लेकिन वे जड़ से निकल नहीं पाता। वह खेत में ही रह जाता है। उसे अपने आप सड़ कर खत्म होने में लगभग 1 से डेढ़ महीने का समय लगता है। लेकिन किसानों के पास इतना समय नहीं होता है कि वे इसका इंतजार करें क्योंकि उन्हें अगली फसल के लिए मिट्टी तैयार करना होता है। इसलिए फसल के बचे हुए हिस्से को वे जला देते हैं।

पराली जलाने के कई नुकसान हैं। इसे जलाने से मीथेन और कार्बन मोनो ऑक्साइड जैसे गैस निलकते हैं। जो हमारे हेल्थ के लिए काफी नुकसानदायक है। ये जहरीले धुएं हमारे शरीर में जाकर कई तरह की परेशानियां करती हैं। इससे फेफड़े की समस्या, सांस लेने में तकलीफ, कैंसर समेत अन्य बीमारी के होने का खतरा भी बढ़ जाता है। हवा में धूल के कण और अन्य प्रदूषित गैस होती हैं।

पराली जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बनिक कंपाउंड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन गैस निकलती है।

पराली जलाने वाले किसानों पर 15000 रुपये का जुर्माना, 6 महीने की जेल हो सकती है।

फसल के अवशेष को जलाने से फसल के ऊपरी परत में मौजूद सूक्ष्म जीवों को नुकसान होता है। इससे मिट्टी की जैविक गुणवत्ता प्रभावित होती है। पराली जलाने से पर्यावरण को नुकसान से अधिक मिट्टी की उर्वरा शक्ति प्रभावित होती है। केवल एक टन पराली जलाने से 5.5 किग्रा नाइट्रोजन, 2.3 किग्रा फास्फोरस, 25 किग्रा पोटेशियम और 1.2 किग्रा सल्फर जैसे मिट्टी के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। पराली की आग की गर्मी से मिट्टी में मौजूद कई उपयोगी बैक्टीरिया और कीट(insects) भी नष्ट हो जाते हैं। पराली जलाने से जमीन के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। पराली को आग लगाने से एक एकड़ में 25 किलो पोटाश और पांच किलो नाइट्रोजन नष्ट हो जाती है।

पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण को खत्म करने के लिए 2018–19 से पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के लिए एक योजना लागू की गई थी। इसके तहत फसल अवशेषों के मैनेजमेंट के लिए आवश्यक मशीनरी पर सब्सिडी दी जाती है।

आज आवश्यकता है। हम खेती में प्राकृतिक उर्वरकों का उपयोग भी करें! फसलों के अवशेषों से खाद बनायें। सरकारें जो सुविधायें दे रही उनका लाभ ले और प्रकृति मानवता पर संकट आ जाता है। उसे टालने में सहयोग करें।

bjpkamaljyoti@gmail.com

भारत विश्वस्त लोकतंत्र के रूप में उभर रहा : मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विजयादशमी के दिन दिल्ली के द्वारका में राम लीला देखी और रावण दहन देखा।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि विजयादशमी अन्याय पर न्याय की, अहंकार पर विनम्रता की और क्रोध पर धैर्य की जीत का पर्व है। यह संकल्पों को दोहराने का भी विशेष शुभ दिन है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस साल हम चंद्रयान की लैंडिंग के ठीक दो महीने बाद विजयादशमी मना रहे हैं। इस दिन शस्त्र पूजन परंपरा का उल्लोख करते हुए प्रधानमंत्री ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि भारत की धरती पर शस्त्रों की पूजा किसी भूमि पर आधिपत्य नहीं, बल्कि उसकी रक्षा के लिए की जाती है। शक्ति पूजा का अर्थ संपूर्ण सृष्टि के सुख, कल्याण, विजय और गौरव की कामना करना है। उन्होंने भारतीय दर्शन के शाश्वत एवं आधुनिक पहलुओं पर बल दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'हम राम की मर्यादा भी जानते हैं और अपनी सीमाओं की रक्षा करना भी जानते हैं।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'भगवान राम की जन्मभूमि पर बन रहा मंदिर सदियों की प्रतीक्षा के बाद हम भारतीयों के धैर्य को मिली विजय का प्रतीक है।' अगली रामनवमी पर मंदिर में प्रार्थना करने से पूरी दुनिया में खुशियां फैलेंगी। प्रधानमंत्री ने कहा, 'भगवान श्री राम बस आने ही वाले हैं।' प्रधानमंत्री ने रामचरितमानस में वर्णित प्रभु राम के आगमन के संकेतों को स्मीरण करते हुए मौजूदा समय में मिल रहे ऐसे ही संकेतों का जिक्र किया, जैसे कि भारतीय अर्थव्यवस्था का पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना, चंद्रमा पर उतरना, नवीन संसद भवन, नारी शक्ति वंदन अधिनियम। उन्होंने कहा, 'भारत आज विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के साथ–साथ सबसे विश्वस्त लोकतंत्र के रूप में उभर रहा है।' प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रभु राम का आगमन इस तरह के शुभ संकेतों में हो रहा है कि 'एक प्रकार से आजादी के 75 साल बाद अब भारत का भाग्य उदय होने जा रहा है।'

उन्होंने समाज के सौहार्द्र को बिगाड़ने वाली विकृत मानसिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा भारत के विकास के बजाय स्वार्थ की सोच रखने वाली ताकतों से सतर्क रहने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा, 'हमें समाज में बुराइयों के, भेदभाव के अंत का संकल्प लेना चाहिए।'

प्रधानमंत्री ने भारत के लिए अगले 25 वर्षों के महत्व को दोहराया। उन्होंने कहा, 'हमें प्रभु राम के उत्कृष्ट लक्ष्यों वाला भारत बनाना है। एक विकसित भारत, जो आत्मनिर्भर हो, एक विकसित भारत, जो विश्व शांति का संदेश देता हो, एक विकसित भारत, जहां सभी को अपने सपनों को पूरा करने का समान अधिकार हो, एक विकसित भारत, जहां लोगों को समृद्धि और संतुष्टि का एहसास हो। यह राम राज की परिकल्पना है।'

इसी आलोक में प्रधानमंत्री ने सभी देशवासियों से जल बचाने, डिजिटल लेन–देन को बढ़ावा देने, स्वच्छता, लोकल के लिए वोकल, गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बनाने, पहले देश और फिर विदेश के बारे में सोचने, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने, मिलेट्स को बढ़ावा देने और अपनाने, फिटनेस जैसे 10 संकल्प लेने को कहा और आखिर में 'हम कम से कम एक गरीब परिवार के घर का सदस्य बनकर उनकी सामाजिक हैसियत को बढ़ाएंगे। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा, 'जब तक देश में एक भी गरीब व्यक्ति है जिसके पास बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं, घर नहीं है, बिजली नहीं है, गैस नहीं है, पानी नहीं है, इलाज की सुविधा नहीं है, हम चैन से नहीं बैठेंगे।

धर्म, धैर्य व सत्य की विजय का प्रतीक विजयादशमी : योगी

गोरक्ष पीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भव्य शोभायात्रा विजयदशमी पर्व पर निकाली गई। गुरु गोरखनाथ का पूजन कर और उनका आशीर्वाद लेकर सीएम योगी आदित्यनाथ रथ पर सवार हुए। नाथपंथ के विशेष वाद्ययंत्र नागफनी, तुरही, नगाड़े, काशी से आए डमरू दल, ढोल, बैंड बाजे की धुन और हनुमान दल के बालकों के हैरतंगेज करतब के बीच शोभायात्रा आगे बढ़ी। जगह–जगह स्वागत में कलाकारों के विविध लोक नृत्य समूची भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। पूरे रास्ते दोनों किनारे पर श्रद्धा से भाव विभोर लोग गोरक्ष पीठाधीश्वर की एक झलक पाने को आतुर नजर आ रहे थे। शोभायात्रा मानसरोवर रामलीला मंदिर पहुंची, जहां गोरक्ष दौरान रास्ते के दोनों तरफ बने मकानों पर बड़ी संख्या में मुस्लिम महिलाएं व बच्चे अपने स्मार्ट फोन में योगी की तस्वीर खींचते रहे। चौधरी कैफुलवरा ने बताया कि उनका परिवार पीढ़ियों से गोरक्ष पीठाधीश्वर की शोभायात्रा का स्वागत करता है। उन्होंने कहा कि गोरक्षपीठ मत, मजहब के विभेद से परे सभी को मानव मात्र के नजरिये से देखता है। अल्पसंख्यक समाज के लोगों का अभिवादन स्वीकार करने के बाद गोरक्ष पीठाधीश्वर का रथ आगे बढ़ा तो नवनिर्मित श्री झूलेलाल मंदिर के समीप बड़ी संख्या में मौजूद सिंधी समाज के लोगों ने करबद्ध होकर उनका व शोभायात्रा का जोरदार स्वागत किया। मानसरोवर मंदिर तक पूरे रास्ते में शोभायात्रा का स्वागत पूजन हआ।

पीठाधीश्वर ने प्रभु श्री राम का राजतिलक किया। जैसे ही गोरक्ष पीठाधीश्वर की अगुवाई वाली शोभायात्रा गोरखनाथ मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुंची पुष्प वर्षा की गई। इससे आगे बढ़ने पर मुस्लिम और बुनकर समाज के लोगों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। उर्दू अकादमी के अध्यक्ष चौधरी कैफुलवरा अंसारी ने गोरक्ष पीठाधीश्वर को फूल माला तथा केसरिया अंगवस्त्र देकर उनका स्वागत किया। गोरक्ष पीठाधीश्वर ने मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन स्वीकार किया और उन्हें व उनके समाज के लोगों को गोरखनाथ मंदिर के नवरात्र अनुष्ठान का प्रसाद दिया। अल्पसंख्यक समाज के लोगों ने इस प्रसाद को माथे से लगाकर गोरक्ष पीठाधीश्वर के प्रति कृतज्ञता जताई। इस जय श्रीराम के जयघोष और तमाम वाद्ययंत्रों की गूंज के बीच गोरक्ष पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ की शोभायात्रा मानसरोवर मंदिर पहुंची। मानसरोवर मंदिर पर देवाधिदेव महादेव व अन्य देव विग्रहों की वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा अर्चना हुई। मानसरोवर मंदिर में पूजन के उपरांत शोभा यात्रा मानसरोवर रामलीला मैदान में पहुंची। यहां चल रही रामलीला में उन्होंने प्रभु श्रीराम का राजतिलक किया।

गोरखपुर में पीठ की वर्षो पुरानी ये परम्परा है। इस अवसर पर योगी जी ने कहा कि धर्म, धैच व सत्य की सदैव विजय होती है। जिसका प्रतीक विजया दशमी पर्व हे। सत्य के रास्ते पर सदैव चलना ही कर्तव्य है।

'स्व' आधारित स्वदेशी विकासपथ अपनायें : भागवत

आश्विन शुद्ध दशमी, मंगलवार दि. 24 अक्टूबर 2023 को नागपुर के रेशिमबाग मैदान में विजयादशमी उत्सव मनाया गया। शारीरिक प्रदर्शन, पथ संचलन के साथ मोहन भागवत जी का उद्बोधन हुआ। जिसमें उन्होंने कहा कि दानवता पर मानवता की पूर्ण विजय के शक्ति पर्व के नाते प्रतिवर्ष हम विजयादशमी का उत्सव मनाते हैं। इस वर्ष यह पर्व हमारे लिए गौरव, हर्षोल्लास तथा उत्साह बढ़ानेवाली घटनाएँ लेकर आया है।

बीते वर्षभर हमारा देश जी–20 नामक प्रमुख राष्ट्रों की परिषद का यजमान रहा। वर्षभर सदस्य राष्ट्रों के राष्ट्रप्रमुख, मंत्रीगण, प्रशासक तथा मनीषियों के अनेक कार्यक्रम भारत में अनेक स्थानों पर सम्पन्न हुए। भारतीयों के आत्मीय आतिथ्य का अनुभव, भारत का गौरवशाली अतीत तथा वर्तमान की उमंगभरी उड़ान सभी देशों के सहभागियों को प्रभावित कर गई। अफ्रीकी यूनियन को सदस्य के नाते स्वीकृत कराने में तथा पहले ही दिन परिषद का घोषणा प्रस्ताव सर्व सहमति से पारित करने में भारत की प्रामाणिक सद्भावना तथा राजनयिक कुशलता का अनुभव सबने पाया। भारत के विशिष्ट विचार व दृष्टि के कारण संपूर्ण विश्व के चिंतन में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की दिशा जुड़ गई। जी –20 का अर्थकेन्द्रित विचार अब मानव केन्द्रित हो गया। भारत को विश्व के मंच पर एक प्रमुख राष्ट्र के नाते दृढ़तापूर्वक स्थापित करने का अभिनंदनीय कार्य इस प्रसंग के माध्यम से हमारे नेतृत्व ने किया है।

इस बार हमारे देश के खिलाड़ियों ने आशियाई खेलों में पहली बार 100 से अधिक – 107 पदक (28 सुवर्ण, 38 रौप्य तथा 41 कांस्य) जीतकर हम सब का उतसाह वर्धन किया है। उनका हम अभिनन्दन करते है। उभरते भारत की शक्ति, बुद्धि तथा युक्ति की झलक चंद्रयान के प्रसंग में भी विश्व ने देखी। हमारे वैज्ञानिकों के शास्त्रज्ञान व तन्त्र कुशलता के साथ नेतृत्व की इच्छाशक्ति जुड़ गई। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अंतरिक्ष युग के इतिहास में पहली बार भारत का विक्रम लैंडर उतरा। समस्त भारतीयों का गौरव व आत्मविश्वास बढ़ानेवाला यह कार्य सम्पन्न करनेवाले वैज्ञानिक तथा उनको बल देनेवाला नेतृत्व संपूर्ण देश में अभिनंदित हो रहा है।

संपूर्ण राष्ट्र के पुरुषार्थ का उद्‌गम उस राष्ट्र का वैश्विक प्रयोजन सिद्ध करनेवाले राष्ट्रीय आदर्श होते हैं। इसलिए हमारे संविधान की मूल प्रति के एक पृष्ठ पर जिनका चित्र अंकित है ऐसे धर्म के मूर्तिमान प्रतीक श्रीराम के बालक रूप का मंदिर अयोध्याजी में बन रहा है। आनेवाली 22 जनवरी को मंदिर के गर्भगृह में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी यह घोषणा हो चुकी है। व्यवस्थागत कठिनाइयों के तथा सुरक्षाओं की सावधानियों के चलते उस पावन अवसर पर अयोध्या में बहुत मर्यादित संख्या ही उपस्थित रह सकेगी। श्रीराम अपने देश के आचरण की मर्यादा के प्रतीक है, कर्तव्य पालन के प्रतीक है, स्नेह व करुणा के प्रतीक है। अपने–अपने स्थान पर ही ऐसा वातावरण बने। राम मंदिर में श्रीरामलला के प्रवेश से प्रत्येक हृदय में अपने मन के राम को जागृत करते हुए मन की अयोध्या सजे व सर्वत्र स्नेह, पुरुषार्थ तथा सद्भावना का वातावरण उत्पन्न हो ऐसे, अनेक स्थानों पर परन्तु छोटे छोटे आयोजन करने चाहिए।

शताब्दियों की संकट परंपरा से जूझकर यशस्वी होकर अब हमारा भारत भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर निश्चित रूप से आगे बढ़ रहा है, इसका संकेत देनेवाली इन घटनाओं के हम सब सौभाग्यशाली साक्षी हैं।

सम्पूर्ण विश्व को अपने जीवन से अहिंसा, जीवदया व सदाचार सिखाने वाला सत्पथ देनेवाले श्री महावीर स्वामी का 2550 वाँ निर्वाण वर्ष, विदेशियों के 350 साल के थोपे हुए पारतंत्र्य में से मुक्ति का मार्ग हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना तथा न्यायपूर्ण जनहितकारी संचालन के द्वारा दिखाने वाले छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का 350 वाँ वर्ष तथा अंग्रेजों के पारतंत्र्य से मुक्ति पाने के लिए सम्पूर्ण देश के जनमानस को अपने 'स्व' के स्वरूप का स्पष्ट व यथातथ्य दर्शन 'सत्यार्थ प्रकाश' द्वारा कराने वाले महर्षी दयानंद सरस्वती का 200 वाँ जन्म जयन्ती वर्ष हम संपन्न कर रहे है ही। आगामी वर्ष इस प्रकार के राष्ट्रीय पुरुषार्थ की शाश्वत प्रेरणा बनी दो विभूतियों

का स्मरण वर्ष भी है। अस्मिता व स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वाली, उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति व पराक्रम के साथ साथ अपनी प्रशासन कुशलता व प्रजाहित दक्षता के लिए आदर्शभूत महारानी दुर्गावती का यह 500 वाँ जयंती वर्ष हैं। भारतीय महिलाओं के सर्वगामी कर्तृत्व, नेतृत्व क्षमता, उज्ज्वल शील तथा जाज्वल्य देशभक्ति की वे देदीप्यमान आदर्श थीं।

ऐसे ही अपनी प्रजाहितदक्षता तथा प्रशासनपटुता के साथ, सामाजिक विषमता के जड़मूल से निर्मूलन के लिए जीवनभर अपनी संपूर्ण शक्ति लगानेवाले कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के शासक छत्रपति शाहूजी महाराज का यह 150 वाँ जयंती वर्ष है।

देश की स्वतंत्रता की अलख जिन्होंने अपने जीवन के यौवनकाल से ही जगाना प्रारंभ किया, गरीबों के अन्नदान कार्यक्रम हेतु जिनका सुलगाया हुआ पहला चुल्हा आज भी तमिलनाडु में प्रदीप्त है और अपना काम कर रहा है, ऐसे तमिल संत श्रीमद् रामलिंग वल्ललार का 200 वाँ वर्ष अभी इसी महीने सम्पन्न हो गया। स्वतंत्रता के साथ–साथ समाज की आध्यात्मिक सांस्कृतिक जागृति तथा सामाजिक विषमता के सम्पूर्ण निर्मूलन के लिए वे जीवनभर कार्य करते रहे।

इन प्रेरणास्पद विभूतियों के जीवन के स्मरण से हम सभी को अपनी स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के सम्पन्न होने के दिनों में सामाजिक समता, एकात्मता तथा अपने स्व की रक्षा का संदेश प्राप्त होता है।

अपने स्व को, अपनी पहचान को सुरक्षित रखना यह मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा व सहज प्रयास है। द्रुतगति से परस्पर निकट आने वाले विश्व में आजकल सभी राष्ट्रों में यह चिंता करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। संपूर्ण विश्व को एक ही रंग में रंगने का, एकरूपता का कोई भी प्रयास अब तक सफल नहीं रहा, न आगे सफल हो सकेगा। भारत की पहचान को, हिंदू समाज की अस्मिता को बनाए रखने का विचार स्वाभाविक तो है ही। आज के विश्व की वर्तमानकालीन समय की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए, अपने स्वयं के मूल्यों पर आधारित, काल सुसंगत, नया रूपरंग लेकर भारत खड़ा हो, यह विश्व की भी अपेक्षा है। मत संप्रदायों को लेकर उत्पन्न हुए कट्टरपन, अहंकार व उन्माद को विश्व झेल रहा है। स्वार्थों के टकराव तथा अतिवादिता के कारण उत्पन्न होने वाले यूक्रेन के अथवा गाझा पट्टी के युद्ध जैसे कलहों का कोई निदान दिख नहीं रहा है । प्रकृतिविरुद्ध जीवनशैली, स्वैरता तथा अनिर्बंध उपभोगों के कारण नई–नई शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं । विकृतियाँ व अपराध बढ़ रहे हैं । आत्यंतिक व्यक्तिवाद के कारण परिवार टूट रहे है । प्रकृति के अमर्याद शोषण से प्रदूषण, वैश्विक तापमानवृद्धि, ऋतुक्रम में असंतुलन व तज्जन्य प्राकृतिक हादसे प्रतिवर्ष बढ रहे हैं । आतंकवाद, शोषण और अधिसत्तावाद को खुला मैदान मिल रहा है । अपनी अधूरी दृष्टि को लेकर विश्व इन समस्याओं का सामना नहीं कर सकता यह स्पष्ट हुआ है । इसलिए अपने सनातन मूल्यों व संस्कारों के आधार पर, भारत अपने उदाहरण से वास्तविक सुख शांति का नवपथ विश्व को दिखाए यह अपेक्षा जगी है ।

अपने स्व को, अपनी पहचान को सुरक्षित रखना यह मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा व सहज प्रयास है।

इन परिस्थितियों की एक छोटी आवृत्ति भारत वर्ष में भी हमारे सम्मुख विद्यमान है । उदाहरणार्थ, हाल ही में हिमालय के क्षेत्र में हिमाचल और उत्तराखंड से लेकर सिक्किम तक लगातार प्राकृतिक आपदाओं का प्राणांतिक खेल हम देख रहे हैं । भविष्य में किसी गंभीर व व्यापक संकट का पूर्वाभास इन घटनाओं के द्वारा हो रहा हो ऐसी शंकाओं की चर्चा भी है ।

देश की सीमा सुरक्षा, जल सुरक्षा तथा पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिए भारत की उत्तर सीमा को निश्चित करनेवाला यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है, किसी भी कीमत पर सर्वथा रक्षणीय है । सुरक्षा, पर्यावरण, जन सांख्यिकी व विकास की दृष्टि से इस पूरे क्षेत्र को एक इकाई मानकर हिमालय क्षेत्र का विचार करना होगा । यह प्रकृतिरम्य क्षेत्र भूगर्भ शास्त्रीय दृष्टि से नया, अभी भी बनता जा रहा और इसलिए अस्थिर भी है । उसके भूपृष्ठ, भूगर्भ, जैव विविधता व जल संपदा की विशेषता को जाने बिना विकास की मनमानी योजनाएँ क्रियान्वित की गईं । इस खिलवाड़ के फलस्वरूप ही यह क्षेत्र व उसके चलते पूरा देश, संकट के कगार पर आने लगा है । हम सब जानते हैं कि भारत सहित पूर्व व दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशों को जलापूर्ति करनेवाला यही क्षेत्र है । इसी क्षेत्र में भारत की उत्तर सीमा पर चीन की दस्तक कई वर्षों से सुनाई दे रही है । इसलिए इस क्षेत्र का विशिष्ट भूगर्भशास्त्रीय, सामरिक व भूराजकीय महत्व है । उसको ध्यान में रखकर ही इस क्षेत्र का अलग दृष्टि से विचार करना होगा ।

परंतु यह संभव न हो पाए, समाज की सामूहिकता छिन्न–भिन्न हो कर अलगाव व टकराव बढे, यह प्रयास भी बढ़ रहे हैं । अपने अज्ञान, अविवेक, परस्पर अविश्वास अथवा असावधानी के कारण समाज में कहीं–कहीं ऐसे अप्रत्याशित उपद्रव व फूट बढ़ती ही जाती दिखाई दे भी रही है । भारत के उत्थान का

प्रयोजन विश्व–कल्याण ही रहा है । परन्तु इस उत्थान के स्वाभाविक परिणाम के नाते स्वार्थी, विभेदकारी तथा छल कपट के आधार पर अपने स्वार्थ का साधन करने वाली शक्तियाँ मर्यादित व नियंत्रित होती हैं, इसलिए उनके द्वारा निरंतर विरोध भी चलता है । यद्यपि यह शक्तियाँ किसी न किसी विचारधारा का आवरण ओढ़ लिया करती हैं, किसी मनलुभावन घोषणा अथवा लक्ष्य के लिए कार्यरत होने का छद्म रचती हैं, उनके वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होते हैं । प्रामाणिकता व निःस्वार्थ बुद्धि से काम करने वाले लोग किसी भी विचारधारा के हों, किसी भी तरह का कार्य करते हों, उनके लिए बाधा ही होते हैं ।

आजकल इन सर्वभक्षी ताकतों के लोग अपने आपको सांस्कृतिक मार्क्सवादी या वोक (वाम) यानी जगे हुए कहते हैं । परंतु मार्क्स को भी उन्होंने 1920 दशक से ही भुला रखा है । विश्व की सभी सुव्यवस्था, मांगल्य, संस्कार, तथा संयम से उनका विरोध है । मुठ्ठी भर लोगों का नियंत्रण सम्पूर्ण मानवजाति पर हो इसलिए अराजकता व स्वैराचरण का पुरस्कार, प्रचार व प्रसार वे करते हैं । माध्यमों तथा अकादमियों को हाथ में लेकर देशों की शिक्षा, संस्कार, राजनीति व सामाजिक वातावरण को भ्रम व भ्रष्टता का शिकार बनाना उनकी कार्यशैली है । ऐसे वातावरण में असत्य, विपर्यस्त तथा अतिरंजित वृत्त के द्वारा भय, भ्रम तथा द्वेष आसानी से फैलता है । आपसी झगड़ों में उलझकर असमंजस व दुर्बलता मे फंसा व टूटा हुआ समाज, अनायास ही इन सर्वत्र अपनी ही अधिसत्ता चाहने वाली विध्वंसकारी ताकतों का भक्ष्य बनता है । अपनी परम्परा में इस प्रकार किसी राष्ट्र की जनता में अनास्था, दिग्भ्रम व परस्पर द्वेष उत्पन्न करनेवाली कार्यप्रणाली को मंत्र विप्लव कहा जाता है ।

आजकल इन सर्वभक्षी ताकतों के लोग अपने आपको सांस्कृतिक मार्क्सवादी या वोक (Woke) यानी जगे हुए कहते हैं। परंतु मार्क्स को भी उन्होंने 1920 दशक से ही भुला रखा है। विश्व की सभी सुव्यवस्था, मांगल्य, संस्कार, तथा संयम से उनका विरोध है ।

देश में राजनीतिक स्वार्थों के कारण राजनीतिक प्रतिस्पर्धी को पराजित करने के लिए ऐसी अवांछित शक्तियों के साथ गठबंधन करने का अविवेक है । समाज पहले से ही आत्मविस्मृत होकर अनेक प्रकार के भेदों से जर्जर होकर, स्वार्थों की घातक प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या व द्वेष में उलझा है । इसलिये इन आसुरी शक्तियों को समाज या राष्ट्र को तोड़ना चाहनेवाली अंदरूनी या बाहरी ताकतों का साथ भी मिलता है ।

मणिपुर की वर्तमान स्थिति को देखते हैं तो यह बात ध्यान में आती है । लगभग एक दशक से शांत मणिपुर में अचानक यह आपसी फूट की आग कैसे लग गई ? क्या हिंसा करनेवाले लोगों में सीमापार के अतिवादी भी थे? अपने अस्तित्व के भविष्य के प्रति आशंकित मणिपुरी मैतेयी समाज और कुकी समाज के इस आपसी संघर्ष को सांप्रदायिक रूप देने का प्रयास क्यों और किसके द्वारा हुआ? वर्षों से वहाँ पर सबकी समदृष्टि से सेवा करने में लगे संघ जैसे संगठन को बिना कारण इसमें घसीटने का प्रयास करने में किसका निहित स्वार्थ है ? इस सीमा क्षेत्र में नागाभूमि व मिजोरम के बीच स्थित मणिपुर में ऐसी अशांति व अस्थिरता का लाभ प्राप्त करने में किन विदेशी सत्ताओं को रुचि हो सकती है ? क्या इन घटनाओं की कारण परंपराओं में दक्षिण पूर्व एशिया की भू– राजनीति की भी कोई भूमिका है ? देश में मजबूत सरकार के होते हुए भी यह हिंसा किनके बलबूते इतने दिन बेरोकटोक चलती रही है ? गत 9 वर्षों से चल रही शान्ति की स्थिति को बरकरार रखना चाहने वाली राज्य सरकार होकर भी यह हिंसा क्यों भड़की और चलती रही ? आज की स्थिति में जब संघर्षरत दोनों पक्षों के लोग शांति चाह रहे हैं, उस दिशा में कोई सकारात्मक कदम उठता हुआ दिखते ही कोई हादसा करवा कर, फिर से विद्वेष व हिंसा भड़कानेवाली ताकतें कौनसी हैं ? इस समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता रहेगी । इस हेतु जहां राजनैतिक इच्छाशक्ति, तदनुरूप सक्रियता एवं कुशलता समय की मांग है, वहीं इसके साथ–साथ दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति के कारण उत्पन्न परस्पर अविश्वास की खाई को पाटने में समाज के प्रबुद्ध

नेतृत्व को भी एक विशेष भूमिका निभानी होगी । संघ के स्वयंसेवक तो समाज के स्तर पर निरंतर सबकी सेवा व राहतकार्य करते हुए समाज की सज्जनशक्ति का शांति के लिए आवाहन कर रहे हैं । सबको अपना मानकर, सब प्रकार की कीमत देते हुए समझाकर, सुरक्षित, व्यवस्थित, सद्भाव से परिपूर्ण और शान्त रखने के लिए ही संघ का प्रयास रहता है । इस भयंकर व उद्विग्न करनेवाली परिस्थिति में भी ठंडे दिमाग से हमारे कार्यकर्ताओं ने जिस प्रकार वहाँ सबकी संभाल के प्रयास किए उस पर तथा उन स्वयंसेवकों पर हमें गर्व है ।

इस मंत्र विप्लव का सही उत्तर तो समाज की एकता से ही प्राप्त होना है । हर परिस्थिति में यह एकता का भान ही समाज के विवेक को जागृत रखनेवाली वस्तु है । संविधान में भी इस भावनिक एकता की प्राप्ति एक मार्गदर्शक तत्व के नाते उल्लेखित है । हर देश में इस एकता के भाव को पैदा करनेवाला अपना–अपना धरातल अलग–अलग रहता है । कहीं पर उस देश की भाषा, कहीं पर उस देश के निवासियों का समान पूजा या विश्वास, कहीं पर सबका समान व्यापारिक स्वार्थ, कहीं पर एक प्रबल केंद्रीय सत्ता बंधन देश के लोगों को एक सूत्र में बाँधकर रखता है । परंतु मानव निर्मित कृत्रिम आधारों पर अथवा समान स्वार्थ के आधार पर बनी हुई एकता की डोर टिकाऊ नहीं होती । हमारे देश में तो इतनी विविधता है कि इस देश का एक देश के नाते अस्तित्व समझने के लिए भी लोगों को समय लगता है । परंतु हमारा यह देश एक राष्ट्र के नाते, एक समाज के नाते, विश्व के इतिहास के सारे उतार चढ़ाव पार कर आज भी अपने भूतकाल के सूत्र से अविछिन्न सम्पर्क बनाए रखकर जीवित खड़ा है ।

"यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाक़ी नामो निशां हमारा,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा"

भारत के बाहर के लोगों की बुद्धि चकित हो जाए, परंतु मन आकर्षित हो जाए ऐसी एकता की परंपरा हमारी विरासत में हमको मिली है । उसका रहस्य क्या है? निःसंशय वह हमारी सर्व समावेशक संस्कृति है । पूजा, परंपरा, भाषा, प्रान्त, जातिपाती इत्यादि भेदों से ऊपर उठकर, अपने कुटुंब से संपूर्ण विश्वकुटुंब तक आत्मीयता को विस्तार देनेवाली हमारी आचरण की व जीवन जीने की रीति है । हमारे पूर्वजों ने अस्तित्व की एकता के सत्य का साक्षात्कार किया । उसके फलस्वरूप शरीर, मन, बुद्धि की एक साथ उन्नति करते हुए तीनों को सुख देनेवाला, अर्थ, काम को साथ चलाकर मोक्ष की तरफ अग्रेसर करनेवाला धर्मतत्व उनको अवगत हुआ । उस प्रतीति के आधार पर उन्होंने धर्मतत्व के चार शाश्वत मूल्यों (सत्य, करुणा, शुचिता व तपस) को आचरण में उतारनेवाली संस्कृति का विकास किया । चारों ओर से सुरक्षित तथा समृद्ध हमारी मातृभूमि के अन्न, जल, वायु के कारण ही यह संभव हुआ । इसलिए हमारी भारतभूमि को हमारे संस्कारों की अधिष्ठात्री माता मानकर उसकी हम भक्ति करते हैं । हाल ही में स्वतन्त्रता संग्राम के महापुरुषों का स्मरण अपनी स्वतंत्रता के 75 वे वर्ष के निमित्त हमने किया । हमारे धर्म, संस्कृति, समाज व देश की रक्षा, समय समय पर उनमें आवश्यक सुधार तथा उनके वैभव का संवर्धन जिन महापुरुषों के कारण हुआ, वे हमारे कर्तृत्व सम्पन्न पूर्वज हम सभी के गौरवनिधान हैं तथा अनुकरणीय हैं । हमारे देश में विद्यमान सभी भाषा, प्रान्त, पंथ, संप्रदाय, जाति, उपजाति इत्यादि विविधताओं को एक सूत्र में बाँधकर एक राष्ट्र के रूप में खड़ा करनेवाले यही तीन तत्व (मातृभूमि की भक्ति, पूर्वज गौरव, व सबकी समान संस्कृति) हमारी एकता का अक्षुण्ण सूत्र है ।

समाज की स्थाई एकता अपनेपन से निकलती है, स्वार्थ के सौदों से नहीं । हमारा समाज बहुत बड़ा है । बहुत विविधताओं से भरा है । कालक्रम में कुछ विदेश की कुछ आक्रामक परंपराएँ भी हमारे देश में प्रवेश कर गईं, फिर भी हमारा समाज इन्हीं तीन बातों के आधार पर एक समाज बनकर रहा । इसलिए हम जब एकता की चर्चा करते हैं, तब हमें यह ध्यान रखना होगा कि यह एकता किसी लेन–देन के कारण नहीं बनेगी । जबरदस्ती बनाई तो बार बार बिगड़ेगी । आज के वातावरण में समाज में कलह फैलाने के चले हुए प्रयासों को देखकर बहुत लोग स्वाभाविक रूप से चिंतित हैं, मिलते रहते हैं । अपने आपको हिंदू कहलाने वाले सज्जन भी मिलते हैं, जिनको उनकी पूजा के कारण मुसलमान, ईसाई कहा जाता है, ऐसे भी लोग मिलते हैं । उनकी मान्यता है कि फितना, फसाद व कितान को छोड़कर सुलह, सलामती व

अमन पर चलना ही श्रेष्ठता है । इन चर्चाओं में ध्यान रखने की पहली बात यही है कि, संयोग से एक भूमि में एकत्र आए विभिन्न समुदायों के एक होने की बात नहीं है । हम समान पूर्वजों के वंशज, एक मातृभूमि की संताने, एक संस्कृति के विरासतदार, परस्पर एकता को भूल गए । हमारे उस मूल एकत्व को समझकर उसी के आधार पर हमें फिर जुड़ जाना है ।

क्या हमारी आपस में कोई समस्या नहीं है ? क्या हमारी अपने विकास के लिए कोई आवश्यकता, अपेक्षा नहीं है ? क्या पाने विकास के लिए हमारी आपस में स्पर्धा नहीं चलती है ? क्या हममें से सब लोग मन, वचन, कर्म से इन एकात्मता के सूत्रों को मानकर व्यवहार करते हैं ? सब जानते हैं कि सबका ऐसा नहीं है । परंतु ऐसा हो यह इच्छा रखनेवालों को यह कहकर नहीं चलेगा, कि पहले समस्याएँ समाप्त हो, पहले प्रश्नों के समाधान हों, फिर हम एकता की बातों का ध्यान करेंगे । हम सभी को यह समझना पड़ेगा कि हम अपनेपन की दृष्टि अपनाकर व्यवहार प्रारंभ करें तो उसी में से समस्याओं के समाधान भी निकलेंगे । इधर उधर घटनेवाली घटनाओं से विचलित न होते हुए, शांति व संयम से काम लेना पड़ेगा । समस्याएं वास्तविक है परन्तु वह केवल एक जाति, वर्ग के लिए ही नहीं है। उनको सुलझाने के प्रयासों के साथ–साथ आत्मीयता व एकता की मानसिकता भी बनानी पड़ेगी। विक्टिमहुड की मानसिकता, एक दुसरे को अविश्वास के दृष्टि से ही देखना अथवा राजनीतिक वर्चस्व के दांवपेचों से अलग होकर चलना पडेगा। ऐसे कार्यों में राजनीति बाधक ही बनती है। यह कोई शरणागति या मजबूरी नहीं है। युद्धरत दो पक्षों का सीज फायर भी नहीं है। भारत की सभी विविधताओं में परस्पर एकता के जो सूत्र विद्यमान है, उन सूत्रों के अपनेपन की यह पुकार है। अपने स्वतन्त्र भारत के संविधान का भी 75 वा वर्ष चल रहा हैं। वह संविधान हमको यही दिशा दिखाता हैं। पूज्य डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के द्वारा संविधान प्रदत्त करते समय संविधान सभा में जो दो भाषण दिए गए उनका ध्यान करेंगे तो यही सार समझ में आता हैं ।

समाज में सामरस्य चाहनेवाले सभी को इन घातक खेलों की माया से बचना पड़ेगा । इन सभी समस्याओं का निदान धीरे धीरे ही निकलेगा। उसके लिए देश में विश्वास का तथा सौहार्द का वातावरण बनना यह पूर्वशर्त है । अपने मन को स्थिर रखकर विश्वास रखते हुए परस्पर संवाद बढ़े, परस्पर समझदारी बढ़े, परस्पर श्रद्धाओं का सम्मान उत्पन्न हो, और सबका मेलजोल बढ़ता चले, इस प्रकार अपने मन, वचन, कर्म रखकर चलना पड़ेगा । प्रचार अथवा धारणाओं से नहीं, वस्तु स्थिति से काम लेना पड़ेगा । धैर्यपूर्वक, संयम और सहनशीलता के साथ, अपने वाणी की तथा कृति की अतिवादिता, क्रोध तथा भय को छोड़कर दृढ़ता पूर्वक, संकल्पबद्ध होकर, लंबे समय तक सतत प्रयास करते रहने की अनिवार्यता है । शुद्ध मन से किए हुए सत् संकल्प तभी पूर्ण होते हैं ।

वर्ष 2025 से 2026 का वर्ष संघ के 100 वर्ष पूरे होने के बाद का वर्ष है । ऊपर निर्दिष्ट सभी बातों में संघ के स्वयंसेवक तब अपना कदम बढ़ायेंगे, इसकी सिद्धता कर रहे हैं । समाज के आचरण में, उच्चारण में संपूर्ण समाज और देश के प्रति अपनत्व की भावना प्रकट हो । मंदिर, पानी, श्मशान में कहीं भेदभाव बाकी है, तो वह समाप्त हो । परिवार के सभी सदस्यों में नित्य मंगल संवाद, संस्कारित व्यवहार व संवेदनशीलता बनी रहे, बढ़ती रहे व उनके द्वारा समाज की सेवा होती रहे । सृष्टि के साथ संबंधों का आचरण अपने घर से पानी बचाकर, प्लास्टिक हटाकर व घर आँगन में तथा आसपास हरियाली बढ़ाकर हो । स्वदेशी के आचरण से स्व–निर्भरता व स्वावलंबन बढ़े । फिजूलखर्ची बंद हो । देश का रोजगार बढ़े व देश का पैसा देश में ही काम आए । इसीलिए स्वदेशी का भी आचरण घर से ही प्रारंभ होना चाहिए । कानून व्यवस्था व नागरिकता के नियमों का पालन हो तथा समाज में परस्पर सद्भाव और सहयोग की प्रवृत्ति सर्वत्र व्याप्त हो । इन पाँचों आचरणात्मक बातों का होना सभी चाहते हैं । परंतु छोटी–छोटी बातों से प्रारंभ कर उनके अभ्यास के द्वारा इस आचरण को अपने स्वभाव में लाने का सतत प्रयास आवश्यक है । संघ के स्वयंसेवक आनेवाले दिनों में समाज के अभावग्रस्त बंधुओं की सेवा करने के साथ–साथ, इन पाँच प्रकार की सामाजिक पहलों का आचरण स्वयं करते हुए समाज को भी उसमें सहभागी व सहयोगी बनाने का प्रयास करेंगे । समाजहित में शासन, प्रशासन तथा समाज की सज्जनशक्ति जो कुछ कर रही है, अथवा करना चाहेगी, उसमें संघ के स्वयंसेवकों का योगदान नित्यानुसार चलता रहेगा ही ।

समाज की एकता, सजगता व सभी दिशा में निस्वार्थ उद्यम, जनहितकारी शासन व जनोन्मुख प्रशासन स्व के अधिष्ठान पर खड़े होकर परस्पर सहयोगपूर्वक प्रयासरत रहते है, तभी राष्ट्र बल वैभव सम्पन्न बनता है । बल और वैभव से सम्पन्न राष्ट्र के पास जब हमारी सनातन संस्कृति जैसी सबको अपना कुटुंब माननेवाली, तमस से प्रकाश की ओर ले जानेवाली, असत् से सत् की ओर बढ़ानेवाली तथा मर्त्य जीवन से सार्थकता के अमृत जीवन की ओर ले जानेवाली संस्कृति होती है, तब वह राष्ट्र, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाते हुए विश्व को सुखशांतिमय नवजीवन का वरदान प्रदान करता है । सद्य काल में हमारे अमर राष्ट्र के नवोत्थान का यही प्रयोजन है।

"चक्रवर्तियों की संतान, लेकर जगद् गुरु का ज्ञान,
बढ़े चले तो अरुण विहान, करने को आए अभिषेक,
प्रश्न बहुत से उत्तर एक"

"भारत माता की जय"

पी०एम० विश्वकर्मा योजना आशा की किरण : सिंह

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्यालय में प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना की प्रदेश कार्यशाला सम्पन्न हुई। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी, केन्द्रीय मंत्री श्री बीएल वर्मा तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह की उपस्थिति में सम्पन्न हुई कार्यशाला में जन सम्पर्क व संवाद से पात्र लोगों को विश्वकर्मा योजना से जोड़ने का प्रशिक्षण दिया गया। भाजपा हर बूथ पर प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना से पात्र लोगों को जोड़ने का अभियान प्रारम्भ करेगी।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि हस्तशिल्पी कारीगर परिवारों के लिए पीएम विश्वकर्मा योजना आशा की किरण बनकर आई है। उन्होंने कहा कि हर शहर, गांव, गली, मौहल्ले, मजरों में कारीगर परिवार है जो पीढ़ी दर मजबूत होगा। योजना के तहत विश्वकर्मा बन्धुओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा आधुनिक टूलकिट के लिए भी 15 हजार रूपए की मदद की जाएगी। इसके साथ ही उत्पादों की ब्रांडिग, पैकेजिंग तथा मार्केटिंग में भी सरकार सहायता करेगी तथा बहुत कम ब्याज दर पर 3 लाख रूपए तक का ऋण भी योजना के तहत दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी लोकल को वोकल और वोकल को ग्लोबल बनाने के संकल्प के साथ काम कर रहे है। हम सभी कोअधिक से अधिक विश्वकर्मा बन्धुओं को योजना से जोड़ने में सहायक बनकर काम करना है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि देश के हस्तशिल्पी देश के अर्थव्यवस्था की मजबूत कड़ी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत की विरासत को

पीढ़ी मिट्टी के बर्तन बनाने, बाल काटने, गलीचे और दरियां बनाने, खिलोने बनाने, मालाएं गूथने जैसे पारम्परिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। देश का यह वर्ग ना सिर्फ परम्परागत उद्योगों को जीवित रखे हुए है बल्कि देश की परम्पराओं का संवाहक भी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ऐसे सभी विश्वकर्माओं का सम्मान, क्षमता व समृद्धि बढ़ाने के लिए भागीदार बनकर आगे आई है। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता ऐसे सभी विश्वकर्मा मित्रों से सम्पर्क करके उन्हें प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना से जोड़ने का काम करेंगे।

केन्द्रीय मंत्री श्री बीएल वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का पीएम विश्वकर्मा योजना के द्वारा देश के विश्वकर्मा बन्धुओं को आधुनिक युग से जोड़ने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि जब देश के शिल्पी आर्थिक रूप से मजबूत होंगे तो देश भी संजों रहे हैं। लकड़ी का कार्य, नांव बनाने का कार्य, लौहे के बर्तन बनाने वाले, मूर्तिकार, मिट्टी के बर्तन, चमड़े का कार्य, कपड़े की सिलाई, भवन निर्माण जैसे 18 तरह के परम्परागत कार्यो को करने वाले लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य पीएम विश्वकर्मा योजना से संभव होगा। परम्परागत हस्तशिल्पियों और कारीगरों के प्रोत्साहन हेतु प्रारम्भ की गई यह योजना देश की अर्थव्यवस्था में असंगठित वर्ग को मजबूती प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि पार्टी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता बूथ स्तर तक पहुंचकर पात्र हस्तशिल्पियों को योजना की जानकारी उपलब्ध कराएगें तथा उन्हें योजना से जोड़ने के लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी योजना को अभियान के रूप में प्रदेश के प्रत्येक हस्तशिल्पी तक पहुंचाने के लिए काम करेगी। संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मानवेन्द्र सिंह ने किया।

''सबका साथ, सबका विकास'' केवल नारा नहीं : योगी

हमारा देश सदैव से ही 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया' की राह पर चला है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस पर आधारित सबका साथ, सबका विकास के भाव को जोड़ दिया है। ऐसा कोई कालखंड नहीं है जब अनुसूचित जाति ने समाज का मार्गदर्शन न किया हो। आजाद भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिए बाबा साहब भीमराव आंबेडकर ने एक ऐसा संविधान बनाया, जो आज 142 करोड़ लोगों को उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक एकता के सूत्र में जोड़ने का काम कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ही सही मायने में बाबा साहब को सम्मान दिया है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब से जुड़े स्थलों को तीर्थ के रूप में विकसित करने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया, चाहे महू हो, दिल्ली, मुंबई, इंग्लैंड का वह भवन जहां रहकर उन्होंने उच्च शिक्षा हासिल की या नागपुर की दीक्षा भूमि, इन सभी स्थलों को पंच तीर्थ के रूप में विकसित किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की ही प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के लखनऊ में डॉ. भीमराव आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र की स्थापना की जा रही है, जहां पर अनुसूचित जाति–जनजाति के नौजवानों को उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए स्कॉलरशिप की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही उच्च अध्ययन करने की व्यवस्था का काम अंतिम दौर में है। ये बातें मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को हापुड़ के आनंद विहार में आयोजित अनुसूचित जाति/जनजाति सम्मेलन में कही।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सबका साथ, सबका विकास केवल नारा नहीं है बल्कि यह योजनाओं में दिखता भी है। पहले योजनाएं व्यक्ति, जाति, मत और मजहब को लेकर बनती थीं, लेकिन आज योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के उपलब्ध कराया जाता है। वर्ष 2015–16 में समाजवादी पार्टी ने अनुसूचित जाति के सभी छात्रों की छात्रवृत्ति रोक दी थी। इतना ही नहीं इसी पार्टी ने ही सहारनपुर के मेडिकल कॉलेज का नाम बदलने का पाप किया था। समाजवादी पार्टी ने ही लखनऊ में भी भाषा विश्वविद्यालय का नाम बदलने का काम किया। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना से अब तक 66 लाख परिवारों को जमीन का मालिकाना हक दिया है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि वह फिर मंच से घोषणा करने के लिए आए हैं। हमारी सरकारी इस बात के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है कि जहां पर अनुसूचित जाति/जनजाति से जुड़ा हुआ कोई भी व्यक्ति निवास कर रहा है, अगर आरक्षित श्रेणी की वह भूमि नहीं है तो उसको वहीं पर मकान बनाने के लिए उस जमीन का पट्टा उपलब्ध करवाने की कार्रवाई डबल इंजन की सरकार करेगी। वहीं आरक्षित श्रेणी की भूमि होने पर अतिरिक्त भूमि दे करके उनके पुनर्वास की प्रापर व्यवस्था की जाएगी। साथ ही अनुसूचित जाति–जनजाति से जुड़े हुए किसी भी गरीब और वंचित को उजाड़ने का काम प्रशासन नहीं कर पाएगा क्योंकि डबल इंजन की सरकार आपके साथ खड़ी है।

पहले पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कोई भी कार्यक्रम होने नहीं दिया जाता था, लेकिन अब कोई रोक नहीं सकता है। आज धूम–धड़ाके के साथ यात्राएं निकल रहीं हैं। पर्व और त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो रहे हैं, यह आपके सामने एक मिसाल है। इसे ही आगे बढ़ाने के लिए आज हम सब आपके पास आए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन की सरकार आपकी समृद्धि, सुरक्षा, खुशहाली और बाबा साहब आंबेडकर के सपनों को जमीनी धरातल पर उतारने के लिए पूरी

प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के लिए समाज के अंतिम पायदान पर बैठा हुआ व्यक्ति भी उतना ही महत्वपूर्ण है जैसे सब, क्योंकि वह समाज का आधार और राष्ट्र की आधारशिला है। अगर आधार और नींव मजबूत होगी तो राष्ट्र का भवन भी अपने आप ही मजबूत हो जाएगा। इस व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सभी योजनाओं का आधार गांव, गरीब, किसान, नौजवान, महिलाएं, वंचित और दलित को बनाया है। वहीं बाबा साहब द्वारा 26 नवंबर को संविधान पर साइन करके इसका ड्राफ्ट तैयार किया था, लेकिन इसे कोई स्मरण नहीं करता था। इस पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 26 नवंबर की तिथि पर भी बाबा साहब के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए और संविधान दिवस के दिन 26 नवंबर की तिथि को याद किया जाना चाहिए।

भाजपा सरकार में सबका हित सुरक्षित – भूपेन्द्र सिंह चौधरी

अनुसूचित वर्ग सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि 2017 में जब भारतीय जनता पार्टी को प्रदेश की सम्मानित जनता ने जनादेश दिया, तब उत्तर प्रदेश बीमारू प्रदेश था। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने राजनैतिक दृढ़ इच्छा शक्ति से प्रदेश की बीमारी का इलाज किया। उन्होंने कहा कि सबसे पहले अपराधियों का स्वर्ग बने उत्तर प्रदेश में अपराध पर अंकुश लगाया। उत्तर प्रदेश में आज माता–बहनें तथा घर, मकान, जमींन, खेत, खलिहान सभी सुरक्षित है। सभी नागरिक अपने–अपने त्यौहार सौहार्द पूर्ण सुरक्षा के माहौल में मना रहे है, जबकि पिछली सरकारों में त्यौहारों और उत्सवों में दंगो की परम्परा हो गई थी। पिछली सरकार में अनुसूचित वर्ग की छात्रवृत्ति रोकी गई जबकि भाजपा सरकार हर वर्ग की छात्रवृत्ति को निर्वाध रखा।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि आज हम पूरी प्रतिबद्धता के साथ कह सकते है कि अनुसूचित वर्ग के हितों को भाजपा सरकार में पूरी तरह से संरक्षित व संवर्धित किया गया। लखनऊ सहित तमाम बड़े शहरों में अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के लिए विशेष रूप से विद्यालय खोले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार एवं मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार की प्रत्येक योजना के केन्द्र

में गरीब, वंचित, शोषित वर्ग की आर्थिक व सामाजिक उन्नति निहित है। योजनाओं का सबसे अधिक लाभ अनुसूचित वर्ग को प्राप्त हुआ है। सबका साथ, सबका विकास व सबका विश्वास की नीति सबको आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रही है। श्री चौधरी ने कहा कि भाजपा सरकार में अनुसूचित वर्ग सहित सभी वर्ग सम्मान, स्वाभिमान से आर्थिक रूप से सुदृढ़ होकर देश को वैभवशाली बनाने के लिए कार्य कर रहे है।

कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह, केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर, सांसद राजेंद्र अग्रवाल, मंत्री असीम अरुण, गुलाब देवी और दिनेश खटीक, भाजपा अनुसूचित मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष राम चन्द्र कनौजिया आदि उपस्थित थे।

समानता संग विविधता

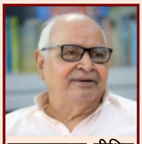

हृदयनारायण दीक्षित

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने विवाह संस्कार में 'सप्तपदी' को अनिवार्य बताया है। सप्तपदी में वस्तुतः वर और कन्या अग्नि के सात फेरे लेते हैं। दोनों साथ–साथ रहने, सुख दुख में सहयोगी बने रहने और जीवन के सभी आयामों में साथ–साथ ही कर्मतप करने का संकल्प लेते हैं। हिन्दू विवाह अधिनियम में भी यही प्रावधान है। हिन्दू संस्कृति में विवाह दिव्य अनुष्ठान है। ऋग्वेद विवाह उत्सवों से भरापूरा है। वैदिक काल के पहले से ही यहां विवाह आनंददायी सामाजिक संस्कार रहा है। विवाह एक सुव्यवस्थित संकल्प था। अथर्ववेद के अनुसार वर कन्या से कहता है कि ''सौभाग्य वृद्धि के लिए मैं आपका हाथ ग्रहण करता हूँ। हम आप आजीवन साथ–साथ रहें। अब आप धर्मानुसार मेरी पत्नी हैं। आप मेरे साथ 100 वर्ष जियें। मैं प्राणतत्व विष्णु हूँ। आप चन्द्रतत्व समृद्धि हैं। आप ऋक् हैं। मैं साम गान हूँ।'' ऋग्वेद में देवताओं को भी विवाहित बताया गया है। विवाह की यही पद्धति पूरे राष्ट्र में चलती है। क्षेत्रीय विविधता के बावजूद मूल परम्परा एक ही रहती है। भारतीय संस्कृति की अनेक परम्पराएं राष्ट्रव्यापी हैं प्रकृति की शक्तियों की उपासना प्राचीनकाल से है। यह उपासना भी भिन्न–भिन्न रूपों में पूरे देश में चल रही है। ऋग्वेद में जल को माता कहा गया है। यूनानी दार्शनिक थेल्स (600 ईसापूर्व) व विकासवादी विचारक चार्ल्स डार्विन जल को सृष्टि का आदि तत्व मानते थे।

भारतीय चिंतन में जल श्रद्धेय हैं। नदियाँ पूरे देश में उपास्य हैं। भारतीय संस्कृति में सप्तसिंधु–सात नदियों वाले विशाल क्षेत्र की प्रतिष्ठा है। वायु प्रत्यक्ष ब्रह्म कहे गए हैं। अग्नि देवता हैं ही। पृथ्वी भी माता हैं। मंदिर और मूर्ति उपासना भी पूरे देश में प्रचलित है। शवदाह की परम्परा संभवतः भारत से ही रोम पहुँची थी। ईसाइयों में शवदाह की परम्परा नहीं थी। इंग्लैंड में 1902 में क्रीमेशन (अंत्येष्टि) एक्ट बना था। इसी अधिनियम से शवदाह की वैधानिकता स्वीकार की गई। शवदाह वैज्ञानिक भी है और मूलतः हिन्दू परम्परा है। ऋग्वेद में शवदाह के समय के मंत्र हैं कि, ''अब तुम्हारी आंखें सूर्य से मिलें और आत्मा विश्व की प्राण शक्ति से मिल जाए।'' इसी परम्परा में प्रकृति के पांच महाभूतों आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से शरीर के बनने और मृत्यु के बाद इन्हीं तत्वों में मिल जाने की मान्यता है। मृतक के परिजन मृतक की अस्थियां पवित्र जलाशयों को सौंपते हैं। डॉ. पी. वी. काणे ने 'धर्मशास्त्र का इतिहास' (पृष्ठ 1136) में लिखा है कि भारत में सामान्य नियम सबको जला देना ही था। शिशु व सन्यासी अपवाद थे।'' यह परम्परा भी पूरे देश में चलती है। हिन्दू मास आश्विन के कृष्णपक्ष को पितृपक्ष कहते हैं। पितृपक्ष में पितरों के इस लोक में आने की मान्यता है। दुनिया के किसी भी देश में मृत पूर्वजों–पितरों के प्रति श्रद्धा की ऐसी परम्परा नहीं मिलती। भारत में यह अनुष्ठान भी पूरे देश में एक जैसा है। भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्योतिर्विज्ञान का महत्व है। ग्रह स्थिति जाँचने के लिए पंचांग बनाए जाते हैं। तिथि, वार (दिन), नक्षत्र, योग और करण पंचांग के 5 मुख्य तत्व हैं। ये भी पूरे देश में एक जैसे हैं। कथित लिबरल और सेकुलर तत्व भारत की विविधता में एकता नहीं देखते। वे स्थानीय मान्यताओं के आधार पर छोटे–छोटे भूक्षेत्रों को अलग–अलग

देश की तरह देखते हैं।
हिन्दू चिंतक प्रत्यक्ष जगत के साथ–साथ अप्रत्यक्ष जगत का भी अध्ययन करते थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में गणितज्ञ डान जिंग की पुस्तक 'नंबर' का उद्धरण दिया है। डान जिंग ने लिखा था, ''अनजाने हिन्दुओं की शून्य के स्थान मूल्य के सिद्धांत की खोज लोकव्यापी महत्व की है। आश्चर्य है कि यूनानी गणितज्ञों ने इसकी खोज क्यों नहीं की?'' आग बेन ने 'मैथमेटिक्स फॉर दि मिलियंस' में इसका सही उत्तर दिया है, ''यह कठिनाई हम हल नहीं कर सकते अगर हम बौद्धिक विकास को कुछ प्रतिभाशाली लोगों के प्रयास का ही परिणाम मानेंगे। हमें उसे पूरी सामाजिक परम्परा और विचार का परिणाम समझना चाहिए।'' बेशक पश्चिमी देशों के विद्वानों की उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन भारत के सामान्य जनजीवन में भी प्रकृति के अध्ययन की सामूहिक परंपरा रही है। समूचा ब्राह्मण्ड एक इकाई है। यह मान्यता भारत की है। विराट ब्राह्मण्ड में करोड़ों रूप हैं। रूप अलग–अलग दिखाई पड़ते हैं। यह विविधता प्रत्यक्ष है। लेकिन भिन्न–भिन्न रूपों वाली विविधता के पीछे एक ही तत्व की उपस्थिति भारतीय चिंतकों को सहज उपलब्ध थी। ऋग्वेद (मण्डल 1) में ऋषि ने कहा है, ''इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि अनेक देवता हैं। लेकिन सत्य एक है। विद्वान उसे कई नामों से पुकारते हैं–एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति।'' यह 'एक' सर्वव्यापी सत्य है। यही विविध रूपों में प्रकट दिखाई पड़ता है।

समूचा ब्राह्मण्ड एक इकाई है। यह मान्यता भारत की है। विराट ब्राह्मण्ड में करोड़ों रूप हैं। रूप अलग-अलग दिखा पड़ते हैं। यह विविधता प्रत्यक्ष है।

भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा, ''जो रूपों रूपों में विभाजित तत्वों को अविभाजित एक तत्व के रूप में देखते हैं। वही वास्तव में देखते हैं।'' एकता ही विविधता में प्रकट होती है। भारत में अनेक भाषाएं बोलियां और अनेक रीति रिवाज हैं। प्रत्यक्ष रूप में सब अलग–अलग दिखाई पड़ते हैं लेकिन सबके भीतर राष्ट्र नाम का एक तत्व विद्यमान है। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को विश्व रूप दिखाया था। इस विश्व रूप में अनेक रूप हैं। विविधता आश्चर्यचकित करती है लेकिन समूचा ब्राह्मण्ड एक है। ऋग्वेद में इन्द्र बड़े देवता हैं। इन्द्र के लिए कहते हैं कि, ''यह एक इन्द्र सभी रूपों में रूप–रूप प्रतिरूप हो रहा है।'' रूप विविधता के प्रतीक हैं और इन्द्र प्रकृति की एकात्म शक्ति। इसी तरह कठोपनिषद में कहते हैं कि, ''यह एक अग्नि ही सभी भुवनों में रूप रूप प्रतिरूप हो रहा है।'' भारत विशाल देश है। मनुष्यों के रूप रंग व जलवायु में विविधता है। मार्क्सवादी विचारक डी० डी० कोशंबी ने 'प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता' में लिखा है कि जलवायु सतरंगी है। तमाम विविधताएं हैं। लेकिन मिस्र की महान अफ्रीकी संस्कृति में वैसी निरंतरता नहीं मिलती जैसी भारत में पिछले 3 हजार या इससे भी ज्यादा वर्षों से है।'' विविधता में एकता मूल शक्ति है।
विविधता ऊपरी है और सर्वव्यापी है। लेकिन एक संस्कृति सबको जोड़कर एकात्म बनाए रखती है। विविधता की अपनी शक्ति है। प्रकृति बहुरूपवती है और समाज भी। लेकिन सबके भीतर विद्यमान एकता का मूल्य बड़ा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक साहित्य के अलावा कौटिल्य का लिखा 'अर्थशास्त्र', पतंजलि के 'योगसूत्र', पाणिनि की 'अष्टाध्यायी', भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र', आचार्य वात्स्यायन का 'कामसूत्र' लोकप्रिय ग्रंथ हैं। सभी ज्ञान अनुशासनों में अपने–अपने विषयों की प्रतिष्ठा है। लेकिन सबके मूल में 'एकात्म सत्य' का विचार छाया हुआ है। विविधता स्वीकार योग्य है लेकिन एकता की शक्ति बड़ी है। विचार भिन्नता और विविधता प्राचीन ज्ञान संस्कृति का गुण सूत्र हैं। मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग और वेदांत भिन्न–भिन्न दर्शन हैं। यहां दार्शनिक दृष्टिकोण की भी विविधता है। लेकिन सभी दर्शनों में एक सत्य की ही आधारभूत निष्ठा है। रूप विविध हैं, रूप के पीछे सांस्कृतिक एकात्मकता है। विविधता में एकता दार्शनिक के साथ वैज्ञानिक भी है। इसे ब्रह्म कहें, अस्तित्व कहें या कोई और नाम दें, वही एकात्म अनुभूति का प्रसाद है।

विविधता ऊपरी है और सर्वव्यापी है। लेकिन एक संस्कृति सबको जोड़कर एकात्म बनाए रखती है। विविधता की अपनी शक्ति है। प्रकृति बहुरूपवती है और समाज भी। लेकिन सबके भीतर विद्यमान एकता का मूल्य बड़ा है।

नवरात्रि में शक्ति जागरण अनुष्ठान

भारतीय चिंतन में तीज त्यौहार केवल धर्मिक अनुष्ठान और परमात्मा की कृपा प्राप्त करने तक सीमित नहीं है। परमात्मा के रूप में परम् शक्ति की कृपा आंकाक्षा तो है ही साथ ही इस जीवन को सुन्दर और सक्षम बनाने का भी निमित्त तीज त्यौहार हैं। इसी सिद्धांत नवरात्र अनुष्ठान परंपरा में है। इन नौ दिनों में मनुष्य की आंतरिक ऊर्जा को सृष्टि की अनंत ऊर्जा से जोड़ने की दिशा में चिंतन है। आधुनिक विज्ञान के अनुसंधान भी इस निष्कर्ष पर पहुंच गये हैं कि व्यक्ति में दो मस्तिष्क होते हैं। एक चेतन और दूसरा अवचेतन। इसे विज्ञान की भाषा में "कॉन्शस" और "अनकॉन्शस" कहा गया है व्यक्ति का अवचेतन मष्तिष्क सृष्टि की अनंत ऊर्जा से जुड़ा होता है। जबकि चेतन मस्तिष्क संसार से। हम चेतन मस्तिष्क से सभी काम करते हैं पर उसकी क्षमता केवल पन्द्रह प्रतिशत ही है। जबकि अवचेतन की सामर्थ्य 85% है। सुसुप्त अवस्था में तो दोनों का संपर्क जुड़ता है। पर यदि जाग्रत अवस्था में चेतन मस्तिष्क अपने अवचेतन से शक्ति लेने की क्षमता प्राप्त कर ले तो उसे वह अनंत ऊर्जा से भी संपन्न हो सकता है। प्राचीनकाल में ऋषियों की वचन शक्ति अवचेतन की इसी ऊर्जा के कारण रही है। नवरात्र में पूजा साधना विधि जन सामान्य को अवचेतन की इसी शक्ति को सम्पन्न करने का प्रयास है। इससे आरोग्य तो प्राप्त होगा ही साथ ही अलौकिक ऊर्जा से संपन्नता भी बढ़ती है। अनंत ऊर्जा से जुड़ने की प्रक्रिया पितृपक्ष से आरंभ होती है। दोनों मिलाकर यह कुल पच्चीस दिनों की साधना है।

सनातन परंपरा में दो बार नवरात्र आते हैं। एक चैत्र माह में और दूसरा अश्विन माह में। ये दोनों माह सृष्टि के पाँचों तत्वों के संतुलन की अवधि होती है। अतिरिक्त क्षमता अर्जित करने के लिये पाँचों तत्वों का संतुलन आवश्यक है। असंतुलन की स्थिति में उस तत्व से संबंधित तो प्रगति तीव्र होती है जिसका अनुपात अधिक होता है पर संपूर्ण की गति कम रहती है। प्रकृति संतुलित हो तो प्राणी ही नहीं समूची वनस्पति में आंतरिक विकास की गति तीव्र होती है। इसका अनुमान हम फसल चक्र से लगा सकते हैं। यदि प्राणी देह की आंतरिक कोशिकाओं के विकास की अवधि में अतिरिक्त प्रयास हों तो अतिरिक्त ऊर्जा से संपन्नता हो सकती है। दोनों नवरात्र में यह शारदीय नवरात्र अधिक महत्वपूर्ण हैं। इस नवरात्र को पितृपक्ष से जोड़ा गया है। पितृपक्ष की नियमित दिनचर्या चित्त को शाँत करती है। शाँत चित्त में ही सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। शरीर, मन और प्राण शक्ति को इस योग्य बनाती है कि व्यक्ति ज्ञान और आत्मा के स्तर पर सृष्टि की अनंत ऊर्जा से जुड़ सके। इसीलिए पितृपक्ष में यम, नियम, संयम, आहार और प्राणायाम पर जोर दिया गया है। जबकि नवरात्र में धारणा ध्यान और समाधि पर।

देवी को आदिशक्ति माना है। इसीलिए भारत में नारी को आद्या कहा है और पुरुष को पूर्णा। शक्ति के विभिन्न रूप हैं। शरीर की शक्ति, मन की शक्ति, बुद्धि की शक्ति, चेतना की शक्ति और प्रकृति की शक्ति। यदि शरीर सबल है किंतु मन भयभीत है तो परिणाम अनुकूल न होंगे। यदि शरीर ठीक है, मन ठीक है पर बुद्धि यह काम न कर रही क कार्य को कैसे पूरा किया जाय तो भी परिणाम अनुकूल न होंगे। सब ठीक होने पर यदि प्रकृति विपरीत हो तो भी परिणाम प्रभावित होगा। इन्ही सब प्रकार की शक्ति अर्जित करने के लिये ही नवरात्र की अवधि है। यह नवरात्र बहु आयामी हैं। ये शरीर को स्वस्थ्य बनाते हैं, शक्ति सम्पन्न बनाते हैं और अंतरिक्ष की अनंत ऊर्जा से जोड़ने हैं। पर अच्छे परिणाम तभी होंगे जब हम पितृपक्ष की अवधि का पालन भी निर्धारित दिनचर्या से करें। जिस प्रकार हम कहीं दूर देश की यात्रा के लिये पहले वाहन की "ओव्हर हालिंग" करते हैं वैसे ही पहले पितृपक्ष में शरीर, मन, विवेक बुद्धि को तैयार किया जाता है।

नवरात्र में नौ देवियों के पूजन का विधान है। प्रत्येक देवी का नाम अलग है, रूप अलग है, पूजन विधि अलग है, और तो और पृथक वनस्पति और पृथक चक्र से संबंधित है। मानव देह में मूलाधार से कुल आठ चक्र होते हैं। आरंभिक आठ दिन इन चक्र के माध्यम से शरीर की सभी कोषिकाओं को सक्रिय और समृद्ध बनाना है। इसे हम देवियों के स्वरूप, पूजन विधि और उनके विभिन्न वनस्पतियों के औषधीय गुणों से समझ सकते

हैं।

देवी के नौ विभिन्न रूप

प्रथम दिवस शैलपुत्री स्वरूप मूलाधार से संबंधित

नवरात्र में प्रथम दिन देवी के 'शैलपुत्री' स्वरूप की पूजन होती है। पर्वतराज हिमालय के घर पुत्री रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम 'शैलपुत्री' कहते हैं। इनका वाहन वृषभ है, इसलिए इनका वृषारूढ़ा नाम भी है। इनके दाएँ हाथ में त्रिशूल और बाएँ हाथ में कमल है।

पूजन मन्त्रः—

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम ॥

अन्य नामः सती, पार्वती, हेमवती और भवानी इन्ही देवी के नाम हैं। मंत्र में जो शब्द स्वर प्रयुक्त हुये हैं उनके उच्चारण से मूलाधार चक्र की कोशिकाएँ जाग्रत होतीं हैं।

माता ब्रह्मचारिणी

दूसरे दिन देवी के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की पूजन होती है । ब्रह्म का अर्थ है तपस्या और चारिणी अर्थात आचरण करने वाली। तब अर्थ हुआ तप का आचरण करने वाली। यह भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने की तपस्चर्या का स्वरूप है।

मन्त्रः—

दधाना करपद्माभ्यामक्षमाला कमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥

मंत्र में अनुत्तमा का अर्थ "जिनसे उत्तम कोई नहीं" और अक्षमाला कमण्डलू शब्द में दो वास्तु होने के कारण कमण्डलु शब्द के द्विवचन का प्रयोग है।

माता चंद्रघंटा

नवरात्र में तीसरे दिन माता चन्द्रघंटा की पूजन होती है। इनके मस्तक पर अर्धचन्द्र आकार की नाद आकृति होती है। इसलिये इन्हे चन्द्रघण्टा देवी कहा गया। देवी की कुल दस भुजायें होतीं हैं, रंग स्वर्ण समान दमकता हुआ है और इनका वाहन सिंह है। यह ध्यान की अवस्था है और साधक का मन 'मणिपूर' चक्र की कोशिकाओं को जाग्रत करता है इससे साधक को अलौकिक आभा और दिव्य सुगन्धि का आभास होता है। यह अंतरिक्ष की अलौकिक ऊर्जा से संपर्क के चिन्ह हैं। इससे मन में सकारात्मक तरंग उठती है जो उसकी आंतरिक ऊर्जा के जाग्रत होने का प्रमाण होता है।

देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चन्द्र है। इसीलिए इन देवी को चन्द्रघण्टा कहा गया है।

इनकी आराधना से अलौकिक अनुभूति के साथ वीरता, निर्भयता सौम्यता और विनम्रता का भाव भी जाग्रत होता है।

मन्त्रः—

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकेर्युता।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥

माता कुष्माँडा

नवरात्र के चौथे दिन माता के कूष्माण्डा स्वरूप पूजन होती है। इस दिन साधक का मन 'अदाहत' चक्र में अवस्थित होता है। देवी के इसी स्वरूप से ब्रह्माण्ड को उत्पत्ति मानी जाती है। देवी के इसी स्वरूप को आदिशक्ति भी कहा जाता है। इनकी आठ भुजाएँ हैं। अष्टभुजा नाम इसी स्वरूप का है। हाथों में कमण्डल, धनुष, बाण, कमल–पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र गदा और सभी सिद्धियों को देने वाली जप माला है। इनका वाहन सिंह है।

इन्हें सूर्यकी केन्द्रीभूत शक्ति माना गया है इसीलिए प्रतीक रूप मेंइनका वास सूर्यमंडल कहा गया है। इनकी आभा सूर्य की भाँति दैदीप्यमान है। पूरे सौर मंडल में सूर्य से जो प्रकाश, ऊर्जा और ऊष्मा फैलती है वह इन्ही देवी की शक्ति से ही। एकाग्र और शाँत चित्त से किये मंत्र जाप और पूजन से यश, बल और आरोग्य प्राप्त होता है।

मन्त्रः—

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदाऽस्तु मे॥

पाँचवा दिन : स्कंधमाता

नवरात्र का पाँचवा दिन देवी के स्कंदमाता स्वरूप का पूजन होता है। दिन स्कंदमाता की उपासना का दिन होता है। शिवजी के पुत्र कुमार कार्तिकेय का एक नाम स्कंध भी है। ये भगवान गणेश के ज्येष्ठ भ्राता हैं। देवी की गोद में दायीं ओर स्कन्ध विराजे हैं। पुत्र स्कंद के गोद में होने के कारण देवी का स्कंदमाता स्वरूप है। देवी की चार भुजाएँ हैं। दायीं भुजा से वे पुत्र स्कंध को साधे हुये और बायाँ हाथ वरद् मुद्रा में हैं। अन्य दोनों ओर के दोनों हाथों में कमल पुष्प है। देवी स्कंदमाता को संसार भर के जड़ चेतन जीवों में चेतना संचार करने वाली माना जाता है। देवी कमल के आसन पर विराजमान हैं। इनका एक नाम पद्मासना भी है। इनका वाहन सिंह है।

मन्त्रः—

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदाऽस्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ।।

देवी कात्यायनी

नवरात्र में माता का छठा स्वरूप कात्यायनी है। इनका संबंध 'आज्ञा' चक्र होता है। इसलिये इनकी उपासना के समय साधक को अपना ध्यान आज्ञाचक्र पर केन्द्रित करना चाहिए। इनका स्वरूप स्वर्ण के समान चमकीला और दिव्य हैं । इनकी चार भुजाएँ हैं। दायीं तरफ का पहला हाथ अभयमुद्रा में तथा दूसरा हाथ वर मुद्रा में है। जबकि बाँयी तरफ पहले हाथ में कृपाण है और दूसरे हाथ में कमल पुष्प है। इनका वाहन सिंह है।

मन्त्रः—

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानव–घातिनी॥

माता कालरात्रि

नवरात्र का सातवें दिन देवी के कालरात्रि स्वरूप की

उपासना होती है। इन्हे 'सहस्रार' चक्र से संबंधित माना जाता है। इसलिए उपासना के समय साधक को अपना ध्यान अपने शरीर के सहस्त्राचार चक्र की ओर केन्द्रित रखना चाहिए। इसी चक्र का संबंध अंतरिक्ष की समस्त ऊर्जाओं से होता है । जो साधक का उनसे संपर्क के द्वार खोलता है।

इनका रौद्र स्वरूप है। बाल बिखरे हैं, गले में विद्युत सी दैदीप्यमान है। इन देवी के तीन नेत्र हैं। यह तीनों ही नेत्र ब्रह्माण्ड के समान गोल हैं। इनकी साँसों से अग्नि निकलती रहती है। इनका वाहन गर्दभ है। इनका एक दाहिना हाथ वरमुद्रा में और दूसरा हाथ अभय मुद्रा में है।

बायीं तरफ एक हाथ में लोहे का काँटा और दूसरे हाथ में खड्ग है। इन्हे भगवान शिव की केन्द्रीभूत ऊर्जा माना गया है इसलिये इन्हे शुभ फल देने शुभंकरी माना गया है ।

मन्त्रः—

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धन्मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी॥

देवी महागौरी

नवरात्र का आठवाँ दिन देवी महागौरी की उपासना होती है । इनका स्वरूप शाँत और प्रसन्न मुद्रा में है। इनकी उपमा शंख, चन्द्र और कुन्द के फूल से दी गई है। इनका स्वरूप, वस्त्राभूषण आदि सब श्वेत हैं । इसीलिए इन्हें श्वेताम्बरधरा भी कहा गया है। इनके अन्य नाम अन्नपूर्णा, ऐश्वर्य प्रदायिनी, चैतन्यमयी भी हैं । इनकी चार भुजाएँ हैं। वाहन वृषभ है। इनका एक दाहिना हाथ अभय मुद्रा में और दूसरा हाथ त्रिशूल धारण किया हुए है। तो बाईं ओर एक हाथ में डमरू और दूसरा वरमुद्रा है।

मन्त्रः—

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव—प्रमोद—दा॥

देवी सिद्धरात्रि

नवरात्र में पूजा उपासना के समापन का दिन नौवां होता है। इस दिन के सिद्धिदात्री स्वरूपकी उपासना होती है। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली हैं। यह नौ दिन की आराधना के समापन का दिन है। देवी के दायीं ओर एक हाथ में गदा, दूसरे में चक्र, तथा बायें एक हाथ में शंख और दूसरे में कमल पुष्प है। इनका आसन कमल पुष्प पर और वाहन सिंह है। इनकी उपासना में साधक को पहले अपने सभी चक्रों और अंगों पर ध्यान लगाकर चित्त को एकाग्र करना फिर देवी के स्वरूप पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। ऐसा करने पर माना जाता है कि देवी की सभी अलौकिक ऊर्जा शरीर के सभी अंगों में संचारित हो रही है। इससे साधक को अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त होतीं हैं। देवी के इसी स्वरूप को अष्ठ सिद्धी दायक भी माना गया है। इन सिद्धियों के नाम अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व हैं।

मन्त्रः—

सिद्धगन्धर्व—यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

देवी साधना में आरोग्य से लेकर अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करने का सिद्धांत

यह हमारा भ्रम और अज्ञानता है कि जो कर रहे हैं हम अपनी सामर्थ्य से कर रहे हैं। वस्तुतः हम एक पग भी प्रकृति की शक्ति के बिना नहीं उठा सकते। हमारे जीवन का एक एक पल और हमारी एक एक श्वांस भी प्रकृति की शक्ति से संचालित होती है। प्रकृति अनंत शक्ति और ऊर्जा से संपन्न है। विज्ञान की भाषा में प्रकृति की ऊर्जा का अंश ही हमको संचालित कर रहा है। वहीं आध्यात्मिक शब्दों में कहें तो हमारे भीतर आत्मा ही उस परम् दिव्य शक्ति का अंश है। दोनों के शब्दों में अंतर है पर भाव एक ही। कि प्रकृति की शक्ति या ऊर्जा ही हमारी सामर्थ्य है। यदि हम कुछ अतिरिक्त प्रयत्न करके प्रकृति से अतिरिक्त ऊर्जा ले लें तो हमारी कार्य ऊर्जा में गुणात्मक वृद्धि हो सकती है। प्रकृति से अतिरिक्त शक्ति प्राप्त करने की साधना के ही दिन हैं ये नवरात्र। पर पहले शरीर, मन, बुद्धि और चेतना को इतना सक्षम बनाना होता है कि वह इस अतिरिक्त ऊर्जा को अपने भीतर समेटने में सक्षम हो सके। शरीर को संतुलित बनाने की अवधि है पितृपक्ष और स्वयं को अतिरिक्त ऊर्जा से युक्त बनाने की अवधि है नवरात्र।

कितने लोग हैं यथा अवस्था में ही जीवन जीते हैं। और कितने लोग हैं जो अपना जीवन शून्य से आरंभ करके भी आसमान की ऊँचाइयाँ छू लेते हैं। यह सब उनकी आंतरिक क्षमता के उपयोग से ही संभव होता है। शरीर की प्रत्येक कोशिका या अंग को स्वस्थ्य रखना और उसे प्रकृति की अनंत ऊर्जा से जोड़ना ही यह कुल अवधि का सारांश है। शरीर की कोशिकाओं या

अंगो को केन्द्र ये आठों चक्र हैं। इनके द्वारा ही ऊर्जा अंगों या कोशिकाओं को पहुंचती है। इसे गर्भावस्था में जीवन विकास क्रम से समझा जा सकता है। गर्भस्थ शिशु माता की नाभि से ही भोजन और श्वांस लेता है। अर्थात माता के नाभि चक्र में वह सामर्थ्य है कि वह एक जीवन को विस्तार दे सकता है। लेकिन गर्भस्थ शिशु के विकास और उनके जन्म के बाद नाभि चक्र की उपयोगिता कितनी रह जाती है। भारतीय अनुसंधान कर्ताओं ने इसी विचार को आगे बढ़ाया और शरीर के सभी चक्रों को अधिक सक्रिय कर अंतरिक्ष की अनंत ऊर्जा से संपन्न होने का मार्ग खोजा। यह नौ दिन की साधना यही मार्ग खोलती है।

इसका यह आशय कदापि नहीं कि पितृपक्ष में पितरों के समीप आने या उनके आशीर्वाद प्राप्त करने की अवधारणा या नवरात्र में देवी को प्रसन्न करने की अवधारणा कोई कम महत्वपूर्ण है। इन दोनों अवधारणाओं का अपना महत्व है। पर इसके साथ हमें इन उपासना के पीछे पितरों और देवी को प्रसन्न करके अपनी सामर्थ्य वृद्धि के दर्शन की बात भी समझना है।

आरोग्य की दृष्टि से नवरात्र

नवरात्र साधना में दैवीय कृपा मिलने, या ध्यान समाधि से अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त करने के मार्ग के साथ औषधियों और आरोग्य प्राप्त करने का अवसर भी होते हैं नवरात्र।

दुर्गा कवच में वर्णित नवदुर्गा नौ विशिष्ट औषधियों में हैं।

प्रथम शैलपुत्री– का संबंध हरड़ से माना गया है जो अनेक प्रकार के रोगों में काम आने वाली औषधि है। हरड़ को हिमायती गया है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप है। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है। यह पथ्य, हरीतिका, अमृता, हेमवती, कायस्थ, चेतकी और श्रेयसी सात प्रकार की होती है।

द्वितीय ब्रह्मचारिणी– इन्हे ब्राह्मी भी कहा गया है। यह ब्राह्मी औषधि स्मरणशक्ति बढ़ाती है और रक्तविकारों को दूर करती है। वाणी को भी मधुर बनाती है। इसलिए इसे सरस्वती भी कहा जाता है।

तृतीय चन्द्रघण्टा– इन्हे चन्द्रसूर भी कहा गया है। चन्द्रसूर एक ऐसा पौधा है जो धनिए के समान है। यह औषधि मोटापा दूर करता है, सुस्ती दूर करता है। शरीर को सक्रिय रहता है और त्वचा रोगों में भी लाभप्रद है।

चतुर्थ कूष्माण्डा– इनका प्रतीक कुंमड़ा है। आज–कल इस दिन कुंमड़े की बलि देने का प्रचलन हो गया है। पर वस्तुतः यह एक प्रकार की औषधि है इससे एक मिष्ठान्न पेठा भी बनता है। इससे रक्त विकार दूर होता है, पेट को साफ होता है। मानसिक रोगों में तो यह अमृत के समान है।

पंचमी देवी स्कन्दमाता – इनका प्रतीक अलसी है। कहते हैं ये देवी अलसी में विद्यमान रहती हैं। अलसी वात, पित्त व कफ रोगों की नाशक औषधि है।

षष्ठम् कात्यायनी– इन्हें मोइया भी कहा गया है। यह औषधि कफ, पित्त व गले के रोगों का नाश करती है।

सप्तम् कालरात्रि– इन देवी का वास नागदौन में माना गया है। यह औषधि नागदौन सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी होती और मनोविकारों को दूर करती है।

अष्ठम् महागौरी– इनका निवास तुलसी में माना गया है। तुलसी कितनी गुणकारी होती है। हम परिचित हैं। तुलसी सात प्रकार की होती है सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरूता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र तुलसी। शरीर मन और मस्तिष्क का ऐसा कोई रोग नहीं जिसमें तुलसी लाभकारी न हो। पिछले दिनों पूरी दुनियाँ में एक बीमारी कोरोना फैली। जिन घरों में तुलसी पत्ती की नियमित चाय बनती थी वहाँ इस बीमारी का प्रभाव नगण्य ही रहा।

नवम् सिद्धिदात्री– इनका वास शतावरी में माना गया है। इसे नारायणी शतावरी भी कहते हैं। यह बल, बुद्धि एवं विवेक के लिए उपयोगी है।

इस प्रकार इन नौ दिनों का संबंध औषधियों से भी है। नवरात्र में नियमानुसार साधना आराधना करके और निर्देशित दिनचर्या करके हम आरोग्य प्राप्त कर सकते हैं। अंतरिक्ष की अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं और दैवी कृपा तो है ही।

जनसंख्या समीकरण

स्वामी श्रद्धानन्द और हिन्दू-मुस्लिम समस्या

सर संघचालक श्री मोहन भागवत जी ने गोवाहाटी में बयान दिया कि 1930 से मुस्लिमों की आबादी बढ़ाई गई क्योंकि भारत को पाकिस्तान बनाना था। इसकी योजना पंजाब, सिंध, असम और बंगाल के लिए बनाई गई थी और यह कुछ हद तक सफल भी हुई। माननीय सर संघचालक जी ने अपने बयान में कहा है कि यह प्रयास 1930 के दशक से बाद से शुरू हुआ। हम भागवत जी के बयान को अपूर्ण मानते है क्योंकि कुछ ऐसे ऐतिहासिक तथ्य है जिनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। यह प्रक्रिया 1930 से कहीं पहले आरम्भ ही चुकी थी।

1924 में आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा 'हिन्दू संगठन' के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की गई थी। इस पुस्तक में पिछले 1200 वर्षों में हिन्दुओं का किस प्रकार से धर्म परिवर्तन हुआ और इसे रोकने के उपायों और हिन्दुओं के संगठन की आवश्यकता पर गंभीर चर्चा की गई थी। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण और दलितों के अधिकारों की अनदेखी को देखकर स्वामी जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। और स्वामी जी देश भर में शुद्धि और हिन्दू संगठन के लिए आंदोलन को आरम्भ कर दिया। स्वामी जी की भेंट कोलकाता दौरे के समय श्री मुखर्जी महोदय से हुई थी। मुखर्जी जी 1911 और 1921 की जनगणना की तुलना कर यह सिद्ध किया कि अगले 420 वर्षों में भारतीय आर्य जाति संसार से मिट जायेगी। उनके अनुसार पिछले 30 वर्षों में हिन्दुओं की जनसंख्या का प्रतिशत 74% से 69% अर्थात 5% कम. हो गया है। 1911 जनगणना के अनुसार मुसलमानों की वृद्धि दर 6.7 और हिन्दुओं की 5% थी। आगे स्वामी जी लिखते है कि मुसलमानों की उत्पादक शक्ति अधिक है। मुसलमानों में 15–40 वर्ष तक के प्रत्येक आदमी के 5 साल की उम्र तक के 37 बच्चे हैं, जबकि हिन्दुओं में केवल 33 ही होते हैं। 1881 से जनगणना वाले इलाकों में मुसलमानों की संख्या 26.4% बढ़ गई जबकि वहां के हिन्दुओं की जनसंख्या 15.1% ही बढ़ी।

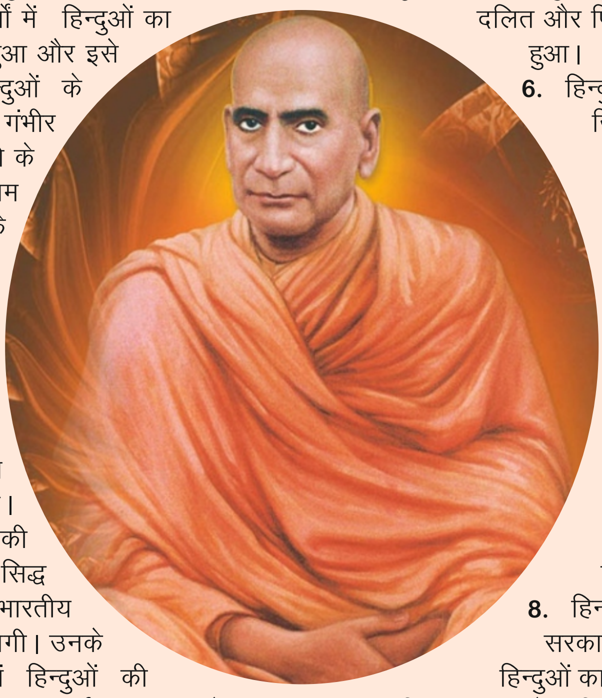

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दुओं की जनसंख्या घटने के निम्नलिखित कारण गिनाये–

1. जबरन धर्म परिवर्तन– 1200 वर्षों में इस्लाम और ईसाइयत के नाम पर कैसे हिन्दुओं का जबरन धर्म परिवर्तन हुआ। मुस्लिम आक्रांता से लेकर मुग़लों के शासन काल का रक्तरंजित इतिहास इसका प्रमाण हैं।
2. राजनीतिक इच्छा शक्ति– मुस्लिम और ईसाई शासक अपने मत में परिवर्तन करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। जबकि हिन्दू शासक अनदेखी करते थे।
3. सूफियों द्वारा बनावटी चमत्कार की कहानियां प्रचारित करना।
4. ईसाई पादरियों जैसे रोबर्ट नोबिली द्वारा धोखे से अथवा फ्रांसिस ज़ेवियर द्वारा जबरन ईसाई बनाना।
5. अस्पृश्यता अर्थात छुआछूत की बीमारी। जिसके कारण दलित और पिछड़ी जातियों का ईसाई करण हुआ।
6. हिन्दुओं में बाल विवाह का होना जिसके चलते अकाल मृत्यु होने से विधवाओं का अधिक होना। उन विधवाओं का हिन्दू समाज में तिरस्कार होने पर मुसलमानों के घरों में स्वीकार किया जाना।
7. चार आश्रम अर्थात ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की व्यवस्था का भंग होना। इसके कारण हिन्दू समाज को आदर्श व्यक्ति धर्म प्रचार के लिए उपलब्ध नहीं हो पाते।
8. हिन्दू मुस्लिम दंगों के समय सरकार का एक पक्षी होना और हिन्दुओं का नेतृत्व विहीन होना।
9. हिन्दू समाज में शुद्धि अर्थात बिछुड़े हुए भाइयों को वापिस लाने के प्रति बेरुखी होना। वापिस आये हुओं से रोटी–बेटी का सम्बन्ध स्थापित नहीं करना।
10. हिन्दुओं का एक राष्ट्रीय स्तर पर संगठन का न होना। जो हिन्दू समाज के हितों की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली प्रतिनिधित्व कर सकें।
11. 1924 में प्रकाशित पुस्तक 'हिन्दू संगठन' में लिखी गई एक एक बात आज भी 100 वर्ष के पश्चात भी उतनी ही व्यवहारिक और कारगर हैं। आज 100 वर्ष के पश्चात 1947 के विभाजन को झेलने के पश्चात हिन्दू समाज फिर से उसी चौराहे पर खड़ा है। अभी भी समय है।

नमो भारत की यात्रा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में साहिबाबाद रैपिडएक्स स्टेशन पर दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ आरआरटीएस गलियारे के प्राथमिकता वाले खंड का उद्‌घाटन किया। उन्होंने भारत में रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) के शुभारंभ को चिह्नित करते हुए साहिबाबाद से दुहाई डिपो को जोड़ने वाली नमो भारत रैपिडएक्स ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। श्री मोदी ने बेंगलुरु मेट्रो के पूर्व–पश्चिम गलियारे की दो लाइनों को राष्ट्र को समर्पित किया।

प्रधानमंत्री ने रीजनल रैपिड ट्रेन नमो भारत में यात्रा भी की।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि आज पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। आज भारत की पहली रैपिड रेल सेवा, नमो भारत ट्रेन देशवासियों को समर्पित की जा रही है। श्री मोदी ने चार वर्ष पहले दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ आरआरटीएस गलियारे के शिलान्यास को याद किया और आज साहिबाबाद से दुहाई डिपो खंड पर इसके संचालन को चिह्नित किया। उन्होंने उन परियोजनाओं का उद्‌घाटन करने की सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई, जिनका शिलान्यास किया जा चुका है और विश्वास व्यक्त किया कि डेढ़ साल बाद आरआरटीएस के मेरठ खंड के पूरा होने पर वह उसका उद्‌घाटन करने के लिए उपस्थित भी रहेंगे। श्री मोदी ने आज नमो भारत में अपनी यात्रा के अनुभव को साझा किया और देश में रेलवे के कायापलट पर प्रसन्नता व्यक्त की। नवरात्र के अवसर का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि नमो भारत को माता कात्यायनी का आशीर्वाद प्राप्त है। उन्होंने यह भी बताया कि नव उद्‌घाटित नमो भारत ट्रेन में सहायक स्टाफ और लोकोमोटिव पायलट सभी महिलाएं हैं। श्री मोदी ने कहा, "नमो भारत देश में नारीशक्ति के बढ़ते कदमों का प्रतीक है।" प्रधानमंत्री ने नवरात्र के शुभ अवसर पर आज प्राप्त होने वाली परियोजनाओं के लिए दिल्ली, एनसीआर और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि नमो भारत ट्रेन में आधुनिकता भी है, गति भी है। प्रधानमंत्री ने कहा, "नमो भारत ट्रेन नए भारत के नए सफर और नए संकल्पों को परिभाषित कर रही है।"

> **'21वीं सदी का भारत हर क्षेत्र में प्रगति और विकास की अपनी दास्तान लिख रहा है।'**

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत का विकास राज्यों के विकास में निहित है। उन्होंने कहा कि मेट्रो की दो लाइने बेंगलुरु के आईटी हब में कनेक्टिविटी को और बेहतर करेंगी। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन लगभग 8 लाख यात्री मेट्रो से यात्रा कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, "21वीं सदी का भारत हर क्षेत्र में प्रगति और विकास की अपनी दास्तान लिख रहा है।" उन्होंने भारत को समूची दुनिया के आकर्षण का केंद्र बनाने वाली चंद्रयान 3 की सफलता और जी 20 के सफल आयोजन का भी उल्लेख किया। उन्होंने एशियाई खेलों में 100 से अधिक पदक अपने नाम करने वाले रिकॉर्ड प्रदर्शन, भारत में 5जी की शुरुआत और विस्तार तथा रिकॉर्ड संख्या में हो रहे डिजिटल लेन–देन का उल्लेख किया। श्री मोदी ने मेड इन इंडिया टीकों का भी उल्लेख किया जो दुनिया के करोड़ों लोगों के लिए जीवनरक्षक साबित हुए। विनिर्माण क्षेत्र में भारत के उदय का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने मोबाइल फोन, टीवी, लैपटॉप और कंप्यूटर के

लिए भारत में विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने की बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उत्सुकता के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने लड़ाकू विमानों और विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत सहित रक्षा विनिर्माण का भी उल्लेख किया। श्री मोदी ने कहा, "नमो भारत ट्रेन भी मेड इन इंडिया है।" उन्होंने कहा कि प्लेटफार्मों पर स्थापित स्क्रीन डोर भी भारत में निर्मित हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी बताया कि नमो भारत ट्रेन में आवाज का स्तर हेलीकॉप्टर और हवाई जहाज की तुलना में कम है।

प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि नमो भारत, भविष्य के भारत की झलक है और इस बात का भी प्रमाण है कि जब देश की आर्थिक ताकत बढ़ती है, तो कैसे देश की तस्वीर बदलने लगती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह 80 किलोमीटर का दिल्ली मेरठ खंड सिर्फ शुरुआत भर है, क्योंकि पहले चरण में दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान के कई क्षेत्रों को नमो भारत ट्रेन से जोड़ा जाएगा। श्री मोदी ने बताया कि कनेक्टिविटी में सुधार लाने और रोजगार के नए अवसरों का सृजन करने के लिए आने वाले दिनों में देश के अन्य हिस्सों में भी इसी तरह की प्रणाली तैयार की जाएगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि मौजूदा सदी का ये तीसरा दशक भारतीय रेल के बदलाव का दशक है। "मुझे छोटे-छोटे सपने देखने और धीमे चलने की आदत नहीं है। मैं आज की युवा पीढ़ी को गारंटी देना चाहता हूं कि इस दशक के अंत तक, आप भारत की ट्रेनों को दुनिया में किसी से भी पीछे नहीं पाएंगे।" उन्होंने कहा कि भारतीय रेल सुरक्षा, स्वच्छता, सुविधाओं, समन्वय, संवेदनशीलता और क्षमता में दुनिया में नया मुकाम हासिल करेगी। भारतीय रेल 100 प्रतिशत विद्युतीकरण के लक्ष्य के समीप है। उन्होंने नमो भारत और वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनों और अमृत भारत रेलवे स्टेशन योजना के तहत रेलवे स्टेशन को आधुनिक बनाने जैसी पहलों को सूचीबद्ध किया। उन्होंने कहा, "अमृत भारत, वंदे भारत और नमो भारत की ये त्रिवेणी इस दशक के अंत तक भारतीय रेल के आधुनिकीकरण का प्रतीक बनेगी।"

मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि दिल्ली के सराय काले खां, आनंद विहार, गाजियाबाद और मेरठ बस स्टेशनों, मेट्रो स्टेशनों और रेलवे स्टेशनों को नमो भारत प्रणाली से जोड़ा जा रहा है।

श्री मोदी ने कहा कि सरकार सभी नागरिकों के जीवन स्तर और जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने, बेहतर वायु गुणवत्ता प्रदान करने, कचरा फेंकने के स्थानों से छुटकारा पाने, बेहतर शैक्षिक सुविधाएं और सार्वजनिक परिवहन सेवाओं में सुधार लाने पर जोर दे रही है। प्रधानमंत्री ने बताया कि सरकार देश में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए पहले से कहीं अधिक खर्च कर रही है और उन्होंने भूमि, वायु और समुद्र पर सर्वांगीण विकास प्रयासों का उल्लेख किया। जल परिवहन प्रणालियों का उदाहरण देते हुए प्रधानमंत्री ने बताया कि भारत की नदियों में सौ से अधिक जलमार्ग विकसित किए जा रहे हैं, जहां सबसे बड़ा जलमार्ग वाराणसी से हल्दिया तक गंगा के किनारे विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसान अब अंतर्देशीय जलमार्गों की मदद से अपनी उपज क्षेत्र के बाहर भेज सकते हैं। प्रधानमंत्री ने हाल ही में संपन्न गंगाविलास नदी क्रूज का भी उल्लेख किया, जिसने 3200 किमी से अधिक की यात्रा पूरी कर सबसे लंबे नदी क्रूज का विश्व रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने देश में बंदरगाह अवसंरचना के विस्तार और आधुनिकीकरण का उल्लेख किया, जिसका लाभ कर्नाटक जैसे राज्यों को भी मिला है। थल नेटवर्क का जिक्र करते हुए, प्रधानमंत्री ने बताया कि आधुनिक एक्सप्रेसवे के जाल के विस्तार पर 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए जा रहे हैं, जबकि नमो भारत या मेट्रो ट्रेनों जैसी आधुनिक ट्रेनों पर 3 लाख करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने दिल्ली में मेट्रो नेटवर्क के विस्तार का उल्लेख करते हुए कहा कि इसी तरह उत्तर प्रदेश के नोएडा, गाजियाबाद, लखनऊ, मेरठ, आगरा और कानपुर जैसे शहर भी इसी मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं। यहां तक कि कर्नाटक में भी बेंगलुरु और मैसूरु में मेट्रो का विस्तार किया जा रहा है। बढ़ी हुई हवाई कनेक्टिविटी पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 9 वर्षों में हवाई अड्डों की संख्या दोगुनी हो गई है, और भारत की विमानन कंपनियों ने 1000 से अधिक नए विमानों के लिए ऑर्डर दिए हैं। प्रधानमंत्री ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की तीव्र प्रगति को भी रेखांकित करते हुए चंद्रमा पर कदम रखने वाले चंद्रयान का उल्लेख किया। श्री मोदी ने बताया कि सरकार ने 2040 तक की योजना तैयार की है, जिसमें मानवयुक्त अंतरिक्ष यात्राओं के

लिए गगनयान और भारत का अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित किया जाना शामिल है। प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा, "वह दिन दूर नहीं, जब हम अपने अंतरिक्ष यान से चंद्रमा पर पहले भारतीय को उतारेंगे।" उन्होंने दोहराया कि ये विकास देश के युवाओं के लिए और उनके लिए उज्ज्वल भविष्य तैयार करने के लिए किया गया है।

प्रधानमंत्री ने शहरी प्रदूषण को कम करने की जरूरत पर बल दिया। इसी की बदौलत देश में इलेक्ट्रिक बसों का नेटवर्क बढ़ रहा है। केंद्र सरकार ने राज्यों को 10,000 इलेक्ट्रिक बसें उपलब्ध कराने की योजना शुरू की है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार दिल्ली में 600 करोड़ रुपये की लागत से 1300 से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें चलाने की तैयारी कर रही है। इनमें से 850 से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें दिल्ली में चलनी शुरू भी हो चुकी हैं। इसी तरह बेंगलुरु में भी 1200 से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें चलाने के लिए भारत सरकार 500 करोड़ रुपये की मदद दे रही है। उन्होंने कहा, "केंद्र सरकार की कोशिश है कि दिल्ली, उप्र हो या कर्नाटक, हर शहर में आधुनिक और हरित सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा मिले।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में जो बुनियादी ढांचा विकसित किया जा रहा है, उसमें नागरिक सुविधाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि मेट्रो या नमो भारत जैसी ट्रेनें यात्रियों के जीवन में कितनी सुगमता लाएंगी और कैसे गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढांचा देश के युवाओं, व्यापारियों और कामकाजी महिलाओं के लिए नए अवसर लाएगा। उन्होंने कहा, "अस्पतालों जैसी सामाजिक अवसंरचना से मरीजों, डॉक्टरों और मेडिकल छात्रों को लाभ होगा। डिजिटल अवसंरचना पैसे को गलत हाथों में जाने से रोकेगी और उसका सुचारू लेनदेन सुनिश्चित होगा।

वर्तमान में जारी त्योहारों के समय का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री ने किसानों, कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को लाभांवित करने वाले केंद्रीय मंत्रिमंडल के हाल के फैसलों का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि सरकार ने रबी फसलों के एमएसपी में बड़ी वृद्धि की है, जहां मसूर की दाल का एमएसपी 425 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों का एमएसपी 200 रुपये और गेहूं का एमएसपी 150 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि गेहूं का एमएसपी जो 2014 में 1400 रुपये प्रति क्विंटल था, अब 2000 रुपये को पार कर गया है, मसूर दाल का एमएसपी पिछले 9 वर्षों में दोगुना से अधिक हो गया है, और इस अवधि के दौरान सरसों का एमएसपी 2600 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाया जा चुका है। उन्होंने कहा, "यह किसानों को लागत से डेढ़ गुना से अधिक समर्थन मूल्य दिलाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।"

प्रधानमंत्री ने किफायती दरों पर यूरिया की उपलब्धता सुनिश्चित करने वाले कदमों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में जिस यूरिया की बोरी की कीमत 3000 रुपये है, वह भारतीय किसानों को 300 रुपये से भी कम में उपलब्ध है। सरकार इस पर हर साल 2.5 लाख करोड़ से ज्यादा खर्च कर रही है।

प्रधानमंत्री ने सरकार द्वारा फसल के बाद बचे अवशेषों चाहे वह धान की पराली हो या ठूंठ, के उपयोग पर दिए जा रहे जोर पर प्रकाश डाला। उन्होंने देश भर में स्थापित की जा रही जैव ईंधन और इथेनॉल इकाइयों का उल्लेख किया, जिससे 9 वर्ष पहले की तुलना में आज देश में 10 गुणा अधिक इथेनॉल उत्पादन हो रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि इथेनॉल उत्पादन से अब तक किसानों को लगभग 65 हजार करोड़ रुपये मिले हैं। उन्होंने कहा, "पिछले दस महीनों में ही देश के किसानों को कुल 18 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का भुगतान किया जा चुका है।" मेरठ–गाज़ियाबाद क्षेत्र के किसानों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि वर्ष 2023 के केवल 10 महीनों में ही इथेनॉल के लिए 300 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान

किया गया है।

प्रधानमंत्री ने उज्ज्वला लाभार्थियों के लिए गैस सिलेंडर की कीमत 500 रुपये कम करने, 80 करोड़ से अधिक नागरिकों को मुफ्त राशन, केंद्र सरकार के कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को 4 प्रतिशत डीए और डीआर तथा लाखों समूह बी और समूह सी अराजपत्रित रेलवे कर्मचारियों के लिए दिवाली बोनस जैसे त्योहारी उपहारों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, "इससे पूरी अर्थव्यवस्था को फायदा होगा क्योंकि इससे बाजार में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।"

संबोधन का समापन करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि जब ऐसे संवेदनशील फैसले लिए जाते हैं तो हर परिवार में उत्सव की खुशियां बढ़ जाती हैं। और देश के हर परिवार की खुशी उत्सव की खुशियों को और बढ़ाती है। उन्होंने कहा, "आप ही मेरा परिवार हैं, इसलिए आप ही मेरी प्राथमिकता भी हैं। ये काम आपके लिए हो रहा है. यदि आप प्रसन्न होंगे, तो मुझे भी खुशी होगी। यदि आप समर्थ होंगे, तो देश समर्थ बनेगा।"

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश की राज्यपाल सुश्री आनंदीबेन पटेल, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय आवास और शहरी कार्य मंत्री, श्री हरदीप सिंह पुरी और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे, जबकि कर्नाटक के मुख्यमंत्री, श्री सिद्धारमैया भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कार्यक्रम में शामिल हुए।

दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ आरआरटीएस गलियारा

दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ आरआरटीएस गलियारे का 17 किलोमीटर लंबा प्राथमिकता वाला खंड गाजियाबाद, गुलधार और दुहाई स्टेशनों के साथ साहिबाबाद को 'दुहाई डिपो' से जोड़ेगा। प्रधानमंत्री ने 8 मार्च 2019 को दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ गलियारा की आधारशिला रखी थी।

नए विश्व स्तरीय परिवहन बुनियादी ढांचे के निर्माण के माध्यम से देश में क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बदलने की प्रधानमंत्री की कल्पना के अनुरूप, क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) परियोजना विकसित की जा रही है। आरआरटीएस एक नई रेल–आधारित, सैमी हाई स्पीड, हाई फ्रीक्वैन्सी वाली कम्यूटर ट्रांज़िट प्रणाली है। 180 किमी प्रति घंटे की गति के साथ, आरआरटीएस एक परिवर्तनकारी, क्षेत्रीय विकास पहल है, जिसे हर 15 मिनट में इंटरसिटी आवागमन के लिए हाई–स्पीड ट्रेनें प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो आवश्यकता के अनुसार हर 5 मिनट की फ्रीक्वैन्सी तक जा सकती है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में तैयार किए जाने वाले कुल आठ आरआरटीएस कॉरिडोर की पहचान की गई है, जिनमें से तीन कॉरिडोर को चरण– I में लागू करने की प्राथमिकता दी गई है, जिसमें दिल्ली–गाजियाबाद– मेरठ कॉरिडोर; दिल्ली–गुरुग्राम–एसएनबी–अलवर कॉरिडोर; और दिल्ली–पानीपत कॉरिडोर शामिल है।

दिल्ली–गाजियाबाद–मेरठ आरआरटीएस 30,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से तैयार किया जा रहा है, और यह गाजियाबाद, मुरादनगर और मोदीनगर के शहरी केंद्रों से गुजरते हुए एक घंटे से भी कम समय में दिल्ली को मेरठ से जोड़ेगा।

देश में विकसित आरआरटीएस एक अत्याधुनिक क्षेत्रीय गतिशीलता समाधान है, और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ से इसकी बराबरी की जा सकती है। यह देश में एक शहर से दूसरे शहर जाने के लिए सुरक्षित, विश्वसनीय और आधुनिक आवागमन की सुविधा प्रदान करेगा। पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के अनुरूप, आरआरटीएस नेटवर्क में रेलवे स्टेशनों, मेट्रो स्टेशनों, बस सेवाओं आदि के साथ व्यापक मल्टी–मॉडल–एकीकरण होगा। इस तरह के परिवर्तनकारी क्षेत्रीय गतिशीलता समाधान क्षेत्र में आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देंगे; रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल के अवसरों तक बेहतर पहुंच प्रदान करेंगे; और वाहनों की भीड़भाड़ और वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी लाने में मदद मिलेगी।

बेंगलुरु मेट्रो

प्रधानमंत्री औपचारिक रूप से जिन दो मेट्रो लाइनों को राष्ट्र को समर्पित करेंगे उनमें बैयप्पनहल्ली को कृष्णराजपुरा और केंगेरी को चैल्लाघट्टा से जोड़ने वाले खंड शामिल हैं। औपचारिक उद्घाटन की प्रतीक्षा किए बिना, इस गलियारे पर जनता को आवागमन की सुविधा प्रदान करने के लिए इन दो मेट्रो खंडों को 9 अक्टूबर, 2023 से सार्वजनिक सेवा के लिए खोल दिया गया था।

विजय दशमी/स्थापना दिवस

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

दुनिया के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना केशव बलिराम हेडगेवार ने की थी. भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के लक्ष्य के साथ २७ सितंबर १६२५ को विजयदशमी के दिन आरएसएस की स्थापना की गई थी. इस वर्ष विजयदशमी के दिन संघ अपने ६३ वर्ष पूरे कर लेगा और २०२५ में ये संगठन १०० वर्ष का हो जाएगा. नागपुर के अखाड़ों से तैयार हुआ संघ वर्तमान समय में विराट रूप ले चुका है।

संघ के प्रथम सर संघ चालक हेडगेवार ने अपने घर पर १७ लोगों के साथ गोष्ठी में संघ के गठन की योजना बनाई. इस बैठक में हेडगेवार के साथ विश्वनाथ केलकर, भाऊजी कावरे, अण्णा साहने, बालाजी हुद्दार, बापूराव भेदी आदि उपस्थित थे।

संघ का क्या नाम होगा, क्या क्रियाकलाप होंगे सब कुछ समय के साथ धीरे–धीरे तय होता गया. उस समय हिंदुओं को केवल संगठित करने का विचार था. यहां तक कि संघ का नामकरण 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' भी १७ अप्रैल १६२६ को हुआ. इसी दिन हेडगेवार को सर्वसम्मति से संघ प्रमुख चुना गया, लेकिन सरसंघचालक वे नवंबर १६२६ में बनाए गए।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ यह नाम अस्तित्व में आने से पहले विचार मंथन हुआ. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जरीपटका मंडल और भारतोद्धारक मंडल इन तीन नामों पर विचार हुआ. बाकायदा वोटिंग हुई नाम विचार के लिए बैठक में मौजूद २६ सदस्यों में से २० सदस्यों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपना मत दिया, जिसके बाद आरएसएस अस्तित्व में आया।

'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' प्रार्थना के साथ पिछले कई दशकों से लगातार देश के कोने कोने में संघ की शाखायें लग रही हैं. हेडगेवार ने व्यायामशालाएं या अखाड़ों के माध्यम से संघ कार्य को आगे बढ़ाया. स्वस्थ और सुगठित स्वयंसेवक होना उनकी कल्पना में था।

आरएसएस के एक करोड़ से अधिक प्रशिक्षित सदस्य हैं. संघ परिवार में ८० से अधिक समविचारी या आनुषांगिक संगठन हैं. दुनिया के लगभग ४० देशों में संघ सक्रिय है. वर्तमान समय में संघ की ५६ हजार ५६६ दैनिक शाखाएं लगती हैं. लगभग १३ हजार ८४७ साप्ताहिक मंडली और ०८ हजार मासिक शाखाएं भी हैं. संघ में सदस्यों का पंजीकरण नहीं होता. ऐसे में शाखाओं में उपस्थिति के आधार पर अनुमान है कि फिलहाल ५० लाख से अधिक स्वयंसेवक नियमित रूप से शाखाओं में आते हैं. देश की हर तहसील और लगभग ५५ हजार गांवों में शाखा लग रही है।

संघ ने धीरे–धीरे अपनी पहचान एक अनुशासित और राष्ट्रवादी संगठन की बनाई. १६६२ में चीन के धोखे से किये हमले से देश सन्न रह गया. उस वक्त आर एस एस ने सरहदी इलाकों में रसद पहुंचाने में सहायता की थी. इससे प्रभावित होकर प्रधानमंत्री नेहरू ने १६६३ में गणतन्त्र दिवस की परेड में संघ को बुलाया था. १६६५ में पाकिस्तान से युद्ध के दौरान दिल्ली में ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने में संघ ने सहायता की थी. १६७७ में आर एस एस ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी को विवेकानंद रॉक मेमोरियल का उद्‌घाटन करने के लिए बुलाया था।

आर एस एस हिन्दू समाज को उसके धर्म और संस्कृति के आधार पर शक्तिशाली बनाने की बात करता है।

विजयादशमी के दिन संघ स्थापना के साथ ही शस्त्र पूजन की परम्परा निभाई जाती है. देश भर में पथ संचलन निकलते हैं. कभी १७ स्वयंसेवकों से आरम्भ हुआ संघ आज विशाल संगठन के रूप में स्थापित है।

'सशक्तनारी' समृद्ध होता उत्तर-प्रदेश

ऋचा सिंह

वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार मिशन शक्ति फेज 4 का प्रारंभ शक्ति वंदन कार्यक्रम के साथ कर रही है ।महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत नारी सुरक्षा, नारी सम्मान व नारी स्वावलंबन के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं को सशक्त बनाने एवं जागरूक करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित कर महिलाओं, बालिकाओं से वार्ता कर उनके अंदर आत्मविश्वास को बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है। बालिकाओ, छात्राओं, महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के साथ उन्हें सजग, सतर्क एवं निर्भीकता के साथ आत्मनिर्भर बनने एवं सम्मान के साथ अपने क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रेरितऔर प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य सरकार का मिशन शक्ति के अंतर्गत महिला स्वावलंबन के लिए उठाया गया कदम महिलाओं में ऊर्जा और उत्साह का संचार कर रहा है। पिछले 6 वर्षों में प्रदेश की महिलाओं की आत्मनिर्भरता एवं श्रम शक्ति में दोगुने से भी अधिक की वृद्धि हुई है। शहरी महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ–साथ ग्रामीण अंचल की महिलाओं में भी उत्साह बढ़ रहा है। ग्रामीण महिलाओ में समूह के द्वारा कार्य करने की भावना पहले की अपेक्षा बढ़ी है।

लगभग 10 लाख स्वयं सहायता समूह बनाकर उससे एक करोड़ महिलाओं का जुड़ना एक बड़ी उपलब्धि के ओर इशारा करती है जो महिलाओं के सम्मान पूर्वक जीने एवं उनके स्वावलंबी बनने का उदाहरण हैं। यह इस बात को भी दर्शाता है कि आगे चलकर प्रदेश की आर्थिक समृद्धि में महिलाओं की सशक्त भागीदारी होगी। महिलाएं अपने घर एवं परिवार के सभी सदस्यों के पोषण की स्वीकृति के भाव के साथ होती हैं, ऐसी भूमिका में उन्हें परिवार एवं समाज की रीड की हड्डी माना जाता है। यदि समाज व परिवार का यह हिस्सा सम्मान के साथ आत्मनिर्भर हो तो निश्चित रूप सेसमाज ही समृद्धि की ओर कदमबढ़ाकर स्वावलंबन की ओर बढ़ता है।राज्य सरकार के दिशा निर्देश में मिशन शक्ति फेज 1 के प्रारंभ के साथ ही महिलाओं बालिकाओं की सुरक्षा, शिक्षा, सम्मान एवं आत्मनिर्भरता हेतु कई कदम उठाए गए थे जिसका यह स्वर्णिम प्रतिफल है कि महिलाएं आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही है एवं बालिकाएं शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति कर रही हैं। राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार 2017–18 में श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी 14.9 थी जो अब 36.5 प्रतिशत हो गई है।

राज्य सरकार की योजना का ही परिणाम है कि महिलाएं आज प्रदेश में नए कीर्तिमान गढ़ रही हैं। ऐसा दिखा गया है कि बहुत सारी योजनाएं लागू की जाती हैं लेकिन वह जिनके लिए उपयोगी है उस स्तर तक उस व्यक्ति तक वह योजनाएं पहुंच ही नहीं पाती थीं जिनसे उन योजनाओं का लाभ से लाभार्थी व्यक्ति वंचित रह जाता था। मिशन शक्ति के अंतर्गत इन योजनाओं को ग्रामीण अंचल से लेकर के शहरी क्षेत्र में एक समान रूप से लोगों तक जन–जन तक पहुंचाया गया है। वर्तमान में मिशन शक्ति फेस 4 जो नवरात्र के प्रथम दिवस पर प्रारंभ किया गया है इसमें विद्यालय से भी रैली निकाली गई , हर संस्थाओं से विभाग से इसे जोड़ा गया। सुरक्षा, स्वावलंबन के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाली महिलाओं को पुरस्कृत किया गया है और यह एक अभियान बनाकर विद्यालय से लेकर के जिला स्तर तक के बड़े कार्यालय से जोड़ा गया है जिससे मिशन शक्ति के अंतर्गत महिलाओं को सशक्त करने हेतु किए गए प्रयास हर महिला तक हर बालिका तक पहुंच सके और ज्यादा से ज्यादा महिलाएं इससे लाभान्वित हो सके ।

मिशन शक्ति अभियान कार्यक्रम से महिलाओं और बेटियों को स्वयं के अधिकारों को जानने के साथ उनमें एक चेतना जागृत हुई है । कन्या सुमंगला प्रोग्राम ,बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ प्रोग्राम, मिशन शक्ति प्रोग्राम के अंतर्गत बालिकाओं और महिलाओं को एक अवसर प्रदान किया गया जिससे वह सम्मानित और सशक्त महसूस कर सके। ग्राम पंचायत में बीसी सखी और पीएम सम्मान निधि योजना के तहत 2 लाख से

अधिक महिलाओं को लाभान्वित किया जाना ऐसे ही अवसर थे जो महिलाओं को प्रदान किए गए । वर्तमान समय में प्रदेश की महिलाओं ने श्रम शक्ति में मिले अवसरों का उपयोग कर अपने लिए स्वर्णिम भविष्य गढ़ दिया है।

आज कला,विज्ञान ,अंतरिक्ष ,व्यापार, शिक्षा हर क्षेत्र में बालिकाएं आगे निकल रही हैं ऐसे में किसी अवांछनीय तत्व से बिना डरे मिशन शक्ति अभियान के द्वारा बच्चियां, महिलाएं निडर होकर घर से बाहर निकल रही है । मिशन शक्ति के अंतर्गत प्रदेश भर में चल रही महिला संबंधी योजनाएं मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना ,निराश्रित महिला पेंशन योजना , बीसी सखी ,प्रधानमंत्री वंदन योजना आदि का व्यापक प्रचार प्रचार भी किया जा रहा है । जिससे महिलाएं इन योजनाओं का सत प्रतिशत लाभ उठा सके । इन योजनाओं के प्रचारप्रसार विषय हेतु कैंप लगाकर भी अभियान चलाए जा रहे हैं । महिलाओं और बालिकाओं को शासन सुरक्षा संबंधी सेवाएं जैसे विभिन्न पावर लाइन, महिला हेल्पलाइन ,मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, पुलिस आपातकालीन सेवा, चाइल्ड हेल्पलाइन ,चिकित्सा संबंधी स्वास्थ्य सेवा ,एंबुलेंस सेवा को जगह जगह पेंट करा कर लिखाने हेतु निर्देशित दीया गया है । जिससे सभी लोगों तक यह पहुंच सके । सुरक्षा हेतु विभाग द्वारा गठित महिला सुरक्षा बल गांव में जन चौपाल लगाकर , बस स्टैंड, बाजार, गांव ,कस्बा ,स्कूल कॉलेज ,सार्वजनिक एवं भीड़भाड़ वाले स्थान पर बालिकाओं महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा संबंधी उपायों के बारे में भी जागरूक किया जा रहा है। शक्ति दीदी के रूप में महिलाओं से जुड़कर उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है। मिशन शक्ति का उद्देश्य प्रत्येक नारी वह बच्चियों की सुरक्षा तथा सम्मान का अधिकार दिलाना है उन्हें सरकार की योजनाओं से अवगत कराते हुए जागरूक करना मानसिक रूप से सबल व सामान बनाते हुए प्रत्येक क्षेत्र में उन्हें अवसर प्रदान करना है। मिशन शक्ति ने पूर्व में तीन चरणों में अपार सफलता हासिल की तथा इसका सफल क्रियान्वयन पूरे प्रदेश में किया गया है विभिन्न योजनाओं के माध्यम से नारी वंदन अधिनियम के तहत नारियों को सम्मान व सुरक्षा प्रदान किया गया है । आज महिलाएं सिर्फ चूल्हे चौके तक ही सीमित नहीं है आज ऐसा नहीं है कि वह ग्रामीण अंचल से हैं तो उनको अवर नही उपलब्ध है । ग्रामीण क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनकर समाज के पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर आत्मनिर्भर बनते हुए अपने परिवार को आर्थिक एवं सामाजिक सहायता प्रदान कर रही हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत फेज 4 में ऐसी छात्राएं जो विद्यालय से दूर हो रही हैं उन्हें चिन्हित करके उनके अभिभावकों से संपर्क कर उन्हें पावर एंजेल के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा और सघन अभियान चलाकर छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है । बाल अधिकारों के साथ–साथ उन्हें जरूरी कानून के बारे में जानकारी दी जारही एवं सजग एवं सतर्क बनने के लिए दृष्टि प्रदान की जारही ।

आज नए भारत का नया उत्तर प्रदेश सफलता की नई कहानी कह रहा है। सरकार ने समर्थ उत्तर प्रदेश के महिला श्रम शक्ति को सशक्त बना दिया है । इनकी समृद्धि के लिए सरकार संकल्पित है । महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार ने नवरात्रि के पावन अवसर पर मिशन शक्ति की चतुर्थ चरण का प्रारंभ किया है । नारी सुरक्षा नारी सम्मान के साथ स्वावलंबन की दिशा में आगे बढ़ रही है । हुए शारदीय नवरात्रि से निरंतर अनेक कार्यक्रम अयोजित हो रहे हैं । केंद्र सरकार की महिला संबंधित योजनाओं का प्रदेश सरकार पारदर्शी ढंग से सत प्रतिशत लाभ महिलाओं को मिल रहा है। सरकार के कुशल नेतृत्व एवं मॉनिटरिंग का ही परिणाम है कि महिलाओं के श्रम बल की भागीदारी में वृद्धि हुई है । सरकार के मार्गदर्शन में महिलाओं के उत्थान पर विशेष रूप से कार्य किया गया है जिसकी सीएम ने स्वयं मॉनिटरिंग भी की है। केंद्र सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत 1.90 करोड़ बेटियों को जागरूक किया गया है । मिशन शक्ति अभियान के तहत 8.99 करोड़ महिलाओं को जागरूक किया गया है । 189789 आंगनबाड़ी केंद्र स्वीकृत किए गए इनमें से189014 केंद्र संचालित भी हैं 10 लाख सेल्फ ग्रुप बनाकर एक करोड़ महिलाओं को जोड़ा गया 2 लाख से अधिक महिलाओं को पीएम सम्मांन निधि योजना से लाभान्वित किया गया। सभी 57000 से अधिक ग्राम पंचायत में बीसी सखी की नियुक्ति की गई ।सरकारी नौकरियों में भी डेढ़ लाख से अधिक महिलाओं को यूपी में नौकरी से जोड़ा गया साथ ही अन्य सभी योजनाओं से महिलाओं को लाभान्वित किया जा रहा है ।

मिशन शक्ति अभियान के तहत गांव में चौपाल का आयोजन किया जा रहा है । चौपाल में महिलाओं , बालिकाओं को उनके अधिकार बताए जा रहे हैं साथ ही विभिन्न कानून के साथ ही सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही है । मिशन शक्ति फेज 4 में शक्ति दीदी अभियान के तहत चौपाल का आयोजन करके महिलाओं को सम्मानित प्रोत्साहित व सुरक्षित किया जा रहा है । सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं वृद्धा पेंशन योजना ,विधवा पेंशन योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, मुख्यमंत्री निराश्रित महिला पेंशन योजना की जानकारी चौपाल के माध्यम से दी जा रही है इसके साथ ही महिला संबंधी अपराधों के रोकथाम व त्वरित सहायता के लिए विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों को डायल करने के लिए उनका प्रचार प्रसार किया जा रहा है और जगह जगह पर इसे लिखवाया जा रहा है। बालिकाएं शिक्षा से वंचित न हो इसके लिए बाल श्रम ,बाल विवाह आदि के बारे में भी जागरूक किया जा रहा है ।

लेखिका– बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश में शिक्षिका है।

केंद्र सरकार ने उज्ज्वला लाभार्थियों के लिये एलपीजी सब्सिडी बढ़ाकर 300 रुपये की

केंद्र सरकार के इस निर्णय से उज्ज्वला लाभार्थियों को एलपीजी सिलेंडर 603 रुपये में मिलेगा

भाजपानीत केंद्र की राजग सरकार ने चार अक्टूबर को उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को एलपीजी सिलेंडर पर दी जाने वाली सब्सिडी 200 रुपये से बढ़ाकर 300 रुपये कर दी। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों के लिये सब्सिडी बढ़ाने का निर्णय लिया। यह सब्सिडी साल भर में 12 एलपीजी सिलेंडर के लिये मिलेगी।

अब 14.2 किलो वजन वाले गैस सिलेंडर पर सब्सिडी 200 रुपये से बढ़कर 300 रुपये हो गई है। इस कदम से 9.6 करोड़ परिवारों को लाभ होगा। इससे पहले अगस्त में खाना पकाने की गैस के दाम 200 रुपये प्रति सिलेंडर कम किये गये थे। इसके बाद एलपीजी सिलेंडर का दाम घटकर 903 रुपये पर आ गया था।

उज्ज्वला लाभार्थी फिलहाल 14.2 किलोग्राम के एलपीजी सिलेंडर के लिये 703 रुपये देते हैं, जबकि इसका बाजार मूल्य 903 रुपये है। केंद्र सरकार के इस निर्णय के बाद उन्हें सिलेंडर 603 रुपये में मिलेगा।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत लाभार्थियों को मुफ्त में एलपीजी कनेक्शन दिये गये हैं। इसके तहत सब्सिडी उस व्यक्ति के खाते में जाती है, जिसके नाम पर गैस कनेक्शन जारी किया गया हो। उल्लेखनीय है कि सरकार ने गरीब परिवार की महिलाओं को बिना किसी जमा राशि के एलपीजी कनेक्शन प्रदान करने के लिये मई, 2016 में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना शुरू की थी। इसका उद्देश्य ग्रामीण और वंचित गरीब परिवारों को खाना पकाने के लिये स्वच्छ ईंधन तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) उपलब्ध कराना है।

खाना पकाने के लिए स्वच्छ ईंधन के जरिये महिलाओं के जीवन में सुगमता

अतीत में, भारत में गरीब समुदाय, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लोग, अपने स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के बारे में जाने बिना लकड़ी, कोयला और गोबर के उपलों जैसे पारंपरिक ईंधन का उपयोग करते थे। उन्हें स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था। निमोनिया, फेफड़ों के कैंसर, इस्केमिक हृदय और क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी रोगों जैसी बीमारियों के कारण मृत्यु दर का जोखिम बड़े पैमाने पर रिपोर्ट किया गया है।

ऐसे में उज्ज्वला योजना के जरिए महिलाओं को खाना पकाने हेतु स्वच्छ ईंधन उपलब्ध होने से उनके जीवन में सुगमता, बेहतर स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित हुई है। ■

सकल जीएसटी राजस्व संग्रह सितंबर, 2023 में 10 प्रतिशत बढ़कर 1,62,712 करोड़ रुपये हुआ

वित्त वर्ष 2023-24 में चौथी बार जीएसटी संग्रह 1.60 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंचा। वित्त वर्ष 2023-24 की पहली छमाही के लिए 9,92,508 करोड़ रुपये का सकल जीएसटी संग्रह वर्ष दर वर्ष 11 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है

केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा एक अक्टूबर को जारी विज्ञप्ति के अनुसार सितंबर, 2023 के महीने में एकत्रित सकल जीएसटी राजस्व 1,62,712 करोड़ रुपये रहा, जिसमें से सीजीएसटी 29,818 करोड़ रुपये, एसजीएसटी 37,657 करोड़ रुपये, आईजीएसटी 83,623 करोड़ रुपये (वस्तुओं के आयात पर एकत्र किए गए 41,145 करोड़ रुपये सहित) और उपकर 11,613 करोड़ रुपये (वस्तुओं के आयात पर एकत्र 881 करोड़ रुपये सहित) है।

केंद्र सरकार ने आईजीएसटी से सीजीएसटी को 33,736 करोड़ रुपये और एसजीएसटी को 27,578 करोड़ रुपये का निपटान किया है। नियमित निपटान के बाद सितंबर, 2023 के महीने में केंद्र और राज्यों का कुल राजस्व सीजीएसटी के लिए 63,555 करोड़ रुपये और एसजीएसटी के लिए 65,235 करोड़ रुपये है।

सितंबर, 2023 महीने का राजस्व पिछले वर्ष के इसी महीने के जीएसटी राजस्व से 10 प्रतिशत अधिक है। महीने के दौरान, घरेलू लेनदेन (सेवाओं के आयात सहित) से राजस्व पिछले वर्ष के इसी महीने के दौरान इन स्रोतों से प्राप्त राजस्व से 14 प्रतिशत अधिक है। यह चौथी बार है कि वित्त वर्ष 2023-24 में सकल जीएसटी संग्रह 1.60 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया है।

सितंबर, 2023 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष 2023-24 की पहली छमाही के लिए सकल जीएसटी संग्रह (9,92,508 करोड़ रुपये) वित्त वर्ष 2022-23 की पहली छमाही (8,93,334 करोड़ रुपये) के सकल जीएसटी संग्रह से 11 प्रतिशत अधिक है। वित्त वर्ष 2023-24 में औसत मासिक सकल संग्रह 1.65 लाख करोड़ रुपये है, जो वित्त वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के औसत मासिक सकल संग्रह से 11 प्रतिशत अधिक है, जहां यह 1.49 लाख करोड़ रुपये था। ■

प्रधानमंत्री ने नव नियुक्त अभ्यर्थियों को लगभग 51,000 नियुक्ति पत्र किए वितरित

रोज़गार मेला देश भर में 46 स्थानों पर आयोजित किया गया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 सितंबर को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रोजगार मेले को संबोधित किया और नव नियुक्त अभ्यर्थियों को लगभग 51,000 नियुक्ति पत्र वितरित किये। देश भर से चुने गए ये नवनियुक्त अभ्यर्थी सरकार के डाक विभाग, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग, परमाणु ऊर्जा विभाग, राजस्व विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, रक्षा मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय आदि सहित विभिन्न मंत्रालयों/विभागों से जुड़ेंगे। रोज़गार मेला देश भर में 46 स्थानों पर आयोजित किया गया।

उल्लेखनीय है कि नवनियुक्त व्यक्तियों को आईजीओटी कर्मयोगी पोर्टल पर ऑनलाइन मॉड्यूल कर्मयोगी प्रारंभ के माध्यम से खुद को प्रशिक्षित करने का अवसर भी मिल रहा है, जहां 680 से अधिक ई-लर्निंग पाठ्यक्रम 'कहीं भी किसी भी उपकरण' लर्निंग प्रारूप के लिए उपलब्ध कराए गए हैं।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में आज नियुक्ति पत्र ग्रहण करने वाले अभ्यर्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि वे अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण के कारण यहां हैं और उन्हें लाखों अभ्यर्थियों में से चुना गया है।

श्री मोदी ने कहा कि देश ऐतिहासिक उपलब्धियों का साक्षी बन रहा है। उन्होंने आधी आबादी को सशक्त बनाने वाले नारी शक्ति वंदन अधिनियम का उल्लेख किया। नये भारत की बढ़ती आकांक्षाओं का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस नये भारत के सपने बहुत ऊंचे हैं।

श्री मोदी ने कहा कि भारत ने 2047 तक विकसित भारत बनने का संकल्प लिया है। उन्होंने रेखांकित किया कि अगले कुछ वर्षों में देश विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, ऐसे में आने वाले समय में सरकारी कर्मचारियों की भूमिका बहुत ज्यादा बढ़ने वाली है।

शासन में प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए श्री मोदी ने ऑनलाइन रेलवे आरक्षण, आधार कार्ड, डिजिलॉकर, ईकेवाईसी, गैस बुकिंग, बिल भुगतान, डीबीटी और डिजीयात्रा द्वारा दस्तावेज़ीकरण की जटिलता समाप्त होने का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने नए भर्ती होने वालों से इस दिशा में काम करने का आग्रह करते हुए कहा कि प्रौद्योगिकी ने भ्रष्टाचार रोका है, विश्वसनीयता में सुधार किया है, जटिलता में कमी लाई है और सुविधा में वृद्धि की है। ■

'पीएम स्वनिधि योजना' के लाभार्थियों की संख्या 50 लाख के पार

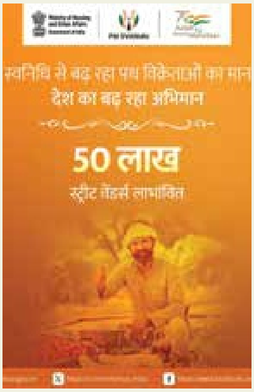

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने चार अक्टूबर को पीएम स्वनिधि योजना के तहत 50 लाख लाभार्थियों के आंकड़े तक पहुंचने की उपलब्धि को सराहा। प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि पीएम स्वनिधि ने न केवल रेहड़ी-पटरी वालों का जीवन आसान बनाया है, बल्कि उन्हें सम्मान के साथ जीने का अवसर भी दिया है।

श्री मोदी ने आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय की एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए कहा कि इस बड़ी उपलब्धि के लिए बहुत-बहुत बधाई! मुझे संतोष है कि पीएम स्वनिधि योजना से न सिर्फ देशभर के हमारे रेहड़ी-पटरी वालों का जीवन आसान हुआ है, बल्कि उन्हें सम्मान के साथ जीने का अवसर भी मिला है। ■

तेलंगाना राज्य में सम्मक्का सरक्का केंद्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 में संशोधन को मिली मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने चार अक्टूबर को आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2014 (2014 की संख्या 6) की तेरहवीं अनुसूची में दिए गए प्रावधान के अनुसार, तेलंगाना राज्य के मुलुगु जिले में सम्मक्का सरक्का केंद्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 में आगामी संशोधन करने के लिए एक विधेयक, अर्थात् केंद्रीय विश्वविद्यालय (संशोधन), विधेयक, 2023 को संसद में पेश करने की मंजूरी दे दी।

इसके लिए 889.07 करोड़ रुपये की धनराशि का प्रावधान होगा। नया विश्वविद्यालय न केवल राज्य में उच्च शिक्षा की पहुंच बढ़ाने के साथ-साथ गुणवत्ता में सुधार करेगा और आदिवासी आबादी के लाभ के लिए राज्य में आदिवासी कला, संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में निर्देशात्मक और अनुसंधान संबंधी सुविधाएं प्रदान करके उच्च शिक्षा और उन्नत ज्ञान के उपायों को भी बढ़ावा देगा। यह नया विश्वविद्यालय अतिरिक्त क्षमता भी तैयार करेगा और क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने का प्रयास करेगा। ■

वोटर चेतना महाभियान
कार्यशाला
दिनांक : 13 अक्टूबर, 2023
स्थान : भाजपा प्रदेश मुख्यालय, लखनऊ

क्षेत्रीय बैठक
भारतीय जनता पार्टी – अवध क्षेत्र
मुख्य अतिथि : श्री धर्मपाल सिंह जी, मा. प्रदेश महामंत्री (संगठन)
दिनांक : 25 अक्टूबर 2023, दिन : बुधवार

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
अक्टूबर द्वितीय 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।